ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जुलाई 2017

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

स्वामी धर्ममुनि जी आश्रम अधिष्ठाता के सानिध्य में

त्रिदिवसीय सरल आध्यात्मिक शिविर सम्पन्न

प्रथम चित्र में शिविराध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक दर्शनाचार्य योग विशारद दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ द्वारा प्रवचन देते हुए। द्वितीय चित्र में पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी उद्बोधन देते हुए तथा श्रोतागण उद्बोधन का आनन्द लेते हुए।

(विवरण पृष्ठ 29 पर)

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज

पंडित रमेश चन्द्र जी कौशिक प्रधान वैदिक यज्ञ समिति झज्जर को सम्मानित किया गया।

(विवरण पृष्ठ 5 पर)

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

953
श्री राजीव जी आर्य
प्रीत विहार, दिल्ली

954
श्री सत्यवीर सिंह जी
फर्रूखनगर, हरियाणा

955
श्रीमती वीरमती जी मलिक
द्वारा श्री अश्वनी जी मलिक
आजाद हिन्द अपार्टमेन्ट,
द्वारका दिल्ली

956 श्रीमती गीता रानी जी
टैगोर गार्डन, दिल्ली

प्रिय बन्धुओं! मास जुलाई में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अगस्त अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

आषाढ़-श्रावण   सम्वत् 2074   जुलाई 2017

सृष्टि सं. 1972949118   दयानन्दाब्द 193

वर्ष-16)   संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी   (अंक-7

(वर्ष 47 अंक 7)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर   आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
मैं तो प्रभु से प्रशंसा पाने का भूखा हूँ	6
आलोचक से द्वेष न करें प्यार करें।	7
प्रभु को हृदयासन पर आसीन करें	9
मुक्तक	10
ऋत सत्य और सत्य का रहस्य	11
विश्व जनसंख्या (11.07.2017) पर	13
बोलना सिखाया जिन्होंने अब उनसे ही बोलते नहीं	14
आज के विकृत संस्कार	17
स्वास्थ्य के लिए जरूरी है हँसना	20
कमर दर्द में करें ताड़ासन	22
पुरुषार्थ और भाग्य	23
ईश भजन/हंसो और हंसाओं	25
पितृ-यज्ञ	26
जगन्नाथ जी में प्रत्यक्ष मिथ्या चमत्कार	28
त्रिदिवसीय सरल आध्यात्मिक शिविर सम्पन्न	29
वह महामानव कौन था जिसने भगत सिंह को.....	30
ईश भजन	31
रामप्रसाद बिस्मिल क्रान्तिकारी	32
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

स्मृति दिवसों पर यज्ञ-सत्संग

श्रीमति अंगूरी देवी धर्मपत्नी श्री रणबीर सिंह जी छिलर नेहरूपार्क बहादुरगढ़ द्वारा सुपुत्री स्वर्गीया इन्दु अण्डर सैक्रेटरी की स्मृतिमध्य इन्दु के 25.06.17 के जन्मदिवस के दिन आश्रम में यज्ञ-सत्संग का आयोजन किया गया। स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा यज्ञोपरान्त आशीर्वाद देते हुए आध्यात्मिक विचार रखे। श्री रणवीर जी छिल्लर द्वारा सभी का धन्यवाद किया गया। परिवार की तरफ से भोजन की व्यवस्था की गई।

चमेली देवी आर्या दिवंगत

आत्मशुद्धि आश्रम से प्रकाशित आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य श्री राजकुमार जी आर्य की पूज्या माता चमेली देवी आर्या का 93 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर 24 जून 2017 को निधन हो गया। आप का जन्म समाजसेवी प्रतिष्ठित लाला देवतराम खरकड़ा हरियाणा के घर 1925 में हुआ और सेठ नोहरचन्द के साथ आपका दाम्पत्य जीवन खुशहाल रहा। आप 93 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बावजूद कभी अस्पताल नहीं गई तथा हमेशा स्वस्थ रही। आप अपने पीछे चार पुत्रों, पुत्रवधूओं, 7 पौत्र-पौत्र वधुओं और 10 प्रपौत्रों से भरा पुरा सम्पन्न परिवार छोड़कर गई। 1980 से न्यू मूल्तान नगर दिल्ली में परिवार के साथ रह रही थी। परिवार द्वारा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन नत्थुराम वाटिका पंजाबी बाग, दिल्ली में 4 जून को किया गया। भारी संख्या में पधारे आर्यजनों द्वारा श्रद्धांजलि दी गई।

आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर एवम् बहादुरगढ़ दोनों आश्रमों के सभी सदस्य परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शोक संतप्त परिजनों को माताजी के बिछो के दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। **-विक्रमदेव शास्त्री**

गृह प्रवेश पर यज्ञ सत्संग

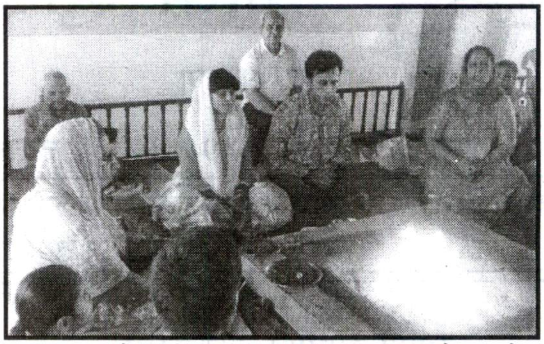

श्री राजेश जी रिहाणी परिवार बहादुरगढ़ में गृहप्रवेश यज्ञ 6 जून शुक्रवार को विक्रमदेव जी शास्त्री द्वारा करवाया गया, पुनः रविवार 11 जून को आत्मशुद्धि आश्रम की भव्ययज्ञशाला में यज्ञ सत्संग का आयोजन किया, श्री राजेश जी श्रीमति ममता रानी रिहाणी पति पत्नी यजमान आसन पर सुशोभित हुए इस शुभअवसर पर रिश्तेदार सगे-सम्बन्धि उपस्थित रहे, श्री रवि शास्त्री द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। ब्रह्मचारी मोहन, श्री रामदेवार्य एवं श्रीमती मोहनी रिहाणी के सुन्दर भजन हुए, डॉ. अशोक नागपाल द्वारा सुन्दर विचार रखे गए। स्वामी धर्ममुनि जी ने आशीर्वाद देते हुए गृह निर्माण, गृहप्रवेश विषय पर प्रभावशाली प्रकाशडाला, परिवार द्वारा उत्तम भोजन की व्यवस्था गई।

यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

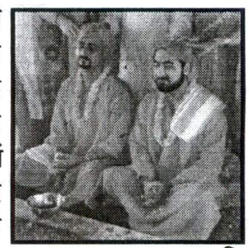

26.06.2017 सोमवार को श्री रोहित पोदेदार एवं श्री रवि पोतेदार दोनों भ्राताओं का आश्रम की भव्ययज्ञशाला में आश्रम निवासियों और रिश्तेदार सम्बन्धियों के मध्य यज्ञोपवीत संस्कार अत्यन्त उत्साह एवं श्रद्धा के साथ आचार्य रवि शास्त्री द्वारा सम्पन्न करवाया गया। रवि शास्त्री एवं स्वामी रामानन्द जी द्वारा यज्ञोपवीत के महत्व पर प्रकाश डाला गया। श्री ब्रह्मप्रकाश जी द्वारा भजन सुनाया गया। स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा आशीर्वाद देते हुए यज्ञोपवीतधारी का जीवन शुद्धपवित्र होना चाहिए। यज्ञोपवीत तीन दण्डों, तन्तुओं, पांच गांठो, कन्धे, छाती कटी से छूने, श्वेत होना आदि बातों पर संक्षेप में वर्णन किया गया, पोतेदार परिवार मूलरूप से कश्मीरी है। वर्तमान में धर्मविहार बहादुरगढ़ में निवास करते हैं। परिवार द्वारा भोजन की विशेष व्यवस्था की गई।

जन्मदिवस पर वस्त्र भेंट किए गये

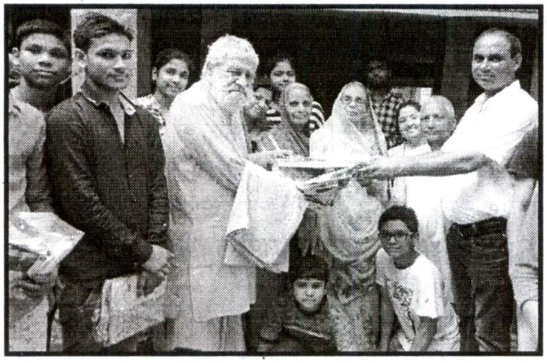

श्री पदमचन्द जी आर्य गुड़गांव की प्रेरणा से श्री ओम्प्रकाश जी सु. श्री रामकिशन जी जींदल तावडु जिला नूह (हरियाणा) 29.06.2017 गुरुवार आत्मशुद्धि आश्रम में सपरिवार पधारे। सुपुत्री कनीस्का जींदल के 17वें जन्मदिवस पर आश्रम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को कच्छे, बनियान, नेकर और कैफरी भेंट किये। आश्रम निवासियों के साथ बैठकर भोजन किया और करवाया तथा चलते समय अपने हार्दिक भाव प्रकट करते हुए कहा स्वामी जी हमें आश्रम में आने पर बड़ी शान्ति मिली है और बच्चों के साथ मिलकर बैठकर भोजन करने में आनन्द का अनुभव हुआ है।

जन्मदिवस पर यज्ञ

श्री श्रीभगवान जी भारद्वाज भैसरूकलां निवासी वर्तमान में बहादुरगढ़ द्वारा सुपौत्र चिरंजीव ईक्षित सु. अशोक कुमार का 9वां जन्मदिवस आश्रम की यज्ञशाला में श्रद्धापूर्वक मनाया गया, रविशास्त्री द्वारा यज्ञ करवाया गया। श्री पुरुषार्थ मुनि जी एवं श्री राजवीर जी आर्य द्वारा बच्चों के निर्माण एवं गृहस्थ जीवन पर सुन्दर विचार रखे। स्वामी धर्ममुनि जी ने आशीर्वाद के साथ जन्मदिवस मनाने के विषय पर प्रवचन दिया। परिवार द्वारा भोजन की व्यवस्था की गई।

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। **–विक्रमदेव शास्त्री**

पं. रमेश कौशिक को मिला स्वामी इंद्रवेश स्मृति आर्य रत्न

स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ एंड फाउंडेंशन टिटोली के द्वारा कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर के समापन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और स्वामी इंद्रवेश फाउंडेशन के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश द्वारा आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के समर्पित उपदेशक एवं आत्मशुद्धि पथ के आजीवन सदस्य वैदिक सत्संग मंडल समिति झज्जर के अध्यक्ष पंडित रमेशचन्द्र कौशिक को स्वामी इंद्रवेश स्मृति आर्यरत्न सम्मान दिया गया।

पंडित रमेश चंद्र कौशिक के द्वारा बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान पिछले पांच वर्ष से चलाया जा रहा है और स्कूल कॉलेजों में ये व्याख्यानमाला कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इस अवसर पर पंडित जयभगवान आर्य, सूबेदार भरत सिंह, सुभाष आर्य, भगवान सिंह आर्य, ओमप्रकाश यादव, रंजन शर्मा, सुषमा, इंद्रजीत मौजूद रहे।

स्वर्गीय प्रताप सिंह मलिक वर्षी यज्ञ

बुधवार 28.06.2017 स्वर्गीय प्रताप सिंह जी मलिक मॉडलटाऊन बहादुरगढ़ की वर्षी पर श्री अश्वनि मलिक एवं श्री अनुप सिंह मलिक सुपुत्रों द्वारा आश्रम की यज्ञशाला में दोनों भ्राता यजमान आसनों पर उपस्थित हुए। श्रद्धापूर्वक यज्ञ श्री विक्रमदेव जी शास्त्री द्वारा सम्पन्न करवाया गया। श्रीमती वीरमति जी मलिक के साथ परिवार के सदस्यों द्वारा अपने कर कमलों द्वारा आहुतियां प्रदान की गई। इस अवसर पर श्रीमती वीरमति मलिक आश्रम द्वारा प्रकाशित आत्मशुद्धिपथ मासिक पत्र की आजीवन सदस्य बनी।

आचार्य चांदसिंह द्वारा सुन्दर भजन सुनाया गया और उपदेश दिया गया। श्री स्वामी धर्ममुनि द्वारा आशीर्वाद देते हुए माता-पिता के अनुवर्ती रहते हुए और परोपकार कार्यों में रूचि रखते हुए, आदर्श गृहस्थ जीवन मर्यादाओं का पालन करते रहें पर प्रकाश डाला। परिवार द्वारा भोजन की व्यवस्था उत्तम की गई।

मैं तो प्रभु से प्रशंसा पाने का भूखा हूँ

– डॉ. रामनाथ वेदालंकार

त्वमङ्ग प्र शंसिषो, देवः शविष्ठ मर्त्यम।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डिता, इन्द्र ब्रवीमि ते वचः।

ऋग् 1.84.19

ऋषि- **गौतमः राहूगणः।** देवता **इन्द्रः।** छन्दः **बृहती।**

(अङ्ग) हे प्रिय **(शविष्ठ)** सबसे अधिक बली **(इन्द्र)** परमात्मन्! **(देवः)** दानी, प्रकाशमान और प्रकाशक **(त्वं)** तू **(मर्त्य)** मनुष्य की **(प्रशंसिषः)** प्रशंसा कर, (उसे साधुवाद और शाबाशी दे)। **(मघवन्)** हे ऐश्वर्यशालिन्! **(त्वत्)** तुझको अतिरिक्त **(अन्यः)** अन्य **(मर्डिता)** सुखदाता **(न)** नहीं (है) **(ते)** तेरे लिए **(वचः)** प्रार्थना- वचन **(ब्रवीमि)** बोल रहा हूँ।

मनुष्य जब कोई प्रशंसायोग्य कार्य करता है, तब वह चाहता है कि उसे प्रोत्साहन मिले, उसे शाबाशी प्राप्त हो, उसकी प्रशंसा में दो शब्द कहे जायें। पर प्रशंसा कौन करे? सांसारिक लोग तो डाह करते हैं कि अमुक शुभ कर्म करने का श्रेय अमुक को क्यों मिल रहा है। वे यदि साधुवाद देते भी है तो ऊपरी मन से देते हैं, या साधुवाद देने में भी उनका कुछ स्वार्थ निहित रहता है। अन्य कुछ वे न भी चाहें, तो भी इतना तो चाहते ही हैं कि जिसे हम बधाई या साधुवाद दे रहे हैं, वह हमारे प्रति कृतज्ञ हो। ऐसे लोग जिसका स्वागत अभिनन्दन साधुवाद आदि करते हैं, उसपर मानो अहसान का भार लादते हैं, जो ग्रहीता को महँगा ही पड़ता है। अतः मुझे सांसारिक जनों के साधुवाद की कोई लालसा नहीं रही है। मैं तो चाहता हूं कि जब भी मुझसे महान् सत्कार्य बन पड़े, तब मुझे इन्द्र-प्रभु का आशीर्वाद और साधुवाद प्राप्त हो, मेरे अन्तःकरण में बैठा हुआ प्रभु उस कार्य के लिए प्रशंसा वचन बोलता हुआ मुझे प्रोत्साहित करे, जिससे भविष्य में मैं और भी अधिक शुभ कार्यों में प्रवृत्त होऊँ। प्रभु का आशीर्वाद सच्चा आशीर्वाद है, जो बिना प्रति फल की आशा से दिया जाता है, जिसमें निश्छल प्रेम के अतिरिक्त किसी प्रकार का स्वार्थ, अहंकार या अहसान का भाव मिश्रित नहीं रहता। इन्द्र-प्रभु 'देव' हैं, सबसे बड़े, दानी और स्वयं सद्गुणों से प्रकाशमान तथा अन्यों को प्रकाशित करने वाले हैं। वे 'शविष्ठ' हैं, सबसे अधिक बलवान् हैं, अतएव सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के सम्राट हैं। वे 'मर्डिता' हैं, शरणागत पर सुख की वर्षा करके उसे निहाल कर देनेवाले हैं। उनसे बढ़कर अन्य कोई सुखदाता नहीं है। सुखदाता होने का अभिमान करनेवाले सैकड़ों हैं, पर उनका दिया सुख सच्चा सुख नहीं होता, बल्कि कभी-कभी तो वह किसी बड़ी विपदा का कारण बन जाता है। प्रभु के सुख के आगे सांसारिक जनों के दिये हुए सुख निःसार हैं, तुच्छ हैं।

हे इन्द्र देव! हे बलियों में बली! हे विश्व-सम्राट! तुम्हीं प्रशंसक बनो, तुम्हीं मेरे 'मर्डिता' बनो। अन्य सबको छोड़कर तुम्हारे ही सम्मुख मैं स्तुति-वचनों और प्रार्थना-वचनों को बोल रहा हूँ। तुम्हीं मुझे आशीष दो, तुम्हीं मुझे सत्पथ पर अग्रसर करो। मैं आज से सर्वात्मना तुम्हारा हूँ। **-वेदमञ्जरी**

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है और दिव्य फार्मेशी पतंजलि उत्पादन वस्तुए भी प्राप्त हैं।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा)

पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

आलोचक से द्वेष न करें प्यार करें।

आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतन। ऋ.10.63.12
हे विद्वानों द्वेष को हमसे दूर करो।

प्रिय पाठक बंधुओं। उपरोक्त वेद सुक्ति में विद्वानों से प्रार्थना की गई है कि हे विद्वानों हमें आप शिक्षा देकर हमारी द्वेष भावना को दूर हटाओ। द्वेष शब्द का अर्थ है कोई बात मन को अच्छी या अप्रिय लगने पर शत्रुता करना। लोकभाषा में ईर्ष्या द्वेष और राग द्वेष ये दो शब्द जोड़े में चलते हैं। महर्षि पतंजलि कहते हैं सुखानुशयी रागः। यो. 2/8 जिस वस्तु से मनुष्य को सुख की प्राप्ति हो उसकी प्राप्ति की बार-बार इच्छा करना राग कहा जाता है और दुखानुशयी द्वेषः यो 2/8. जिस वस्तु तथा व्यक्ति से दुःख की प्राप्ति हो उससे दूर रहने की इच्छा का मन में होना द्वेष कहलाता है। हमारी कोई प्रशंसा करता है सुनकर सुख का अनुभव होता है और यदि कोई हमारी आलोचना करता है तब हम दुःखी हो जाते हैं। उपरोक्त वेद सुक्ति में यही प्रार्थना है कि हमसे भले ही कोई द्वेष करें पर हम किसी से द्वेष ना करें, संध्या के मन्त्रों में दोनों समय छःछः बार प्रार्थना की जाती है योस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विम्मस्तं वो जम्भे दध्मः। अथर्व 3/27। जो हमसे द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं उसको आपके न्याय रूपी सामर्थ्य पर छोड़ते हैं। प्रभु के न्याय पर छोड़ने में ही सुख शांति है हम अपने आलोचकों से द्वेष ना करें प्यारे करें। शांति के इच्छुक बंधुओं। आप स्मरण रखें चारों आश्रमों में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी और चारों वर्णो में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आलोचना से कोई नहीं बच सकता जितने भी महापुरुष हुए हैं सब की आलोचनाएं हुई है। जो जितना बड़ा व्यक्ति होता है उसकी आलोचनाएं भी उतनी ही बड़ी होती है। इसलिए आलोचना से घबराकर धैर्य नहीं खोना चाहिए। आलोचना दो प्रकार की होती है-रचनात्मक और विध्वंसात्मक। प्रत्येक मनुष्य को जीवन में किसी न किसी समय आलोचना का शिकार होना ही पड़ता है। आलोचक को कभी शत्रु नहीं मानना चाहिए कि वह बदनाम करने के लिए दोष लांछन लगा रहा है। ऐसा सदैव नहीं रहता भ्रांतियां भी कारण हो सकती हैं। घटना का उद्देश्य सही रूप से न समझने पर मनुष्य मोटा अनुमान यही लगा लेते हैं कि शत्रुतावश ऐसा कहा जा रहा है स्मरण रहे निंदा करने वालों को इसमें सदैव घाटा ही रहता है। यदि उसकी बात सत्य है तो भी लोग चौकन्ने हो जाते हैं कि कहीं हमारा कोई भेद इसके हाथ तो नहीं लग गया जिसे यह सर्वत्र बकता फिरे। झूठी निन्दा बड़ी बुरी मानी जाती है। विद्वेष उसका कारण माना जाता है। निंदा सुनकर क्रोध आना और बुरा लगना स्वभाविक है, क्योंकि इससे स्वयं के स्वाभिमान को चोट लगती है फिर भी समझदार मनुष्यों के लिए उचित है कि ऐसे अवसरों पर संयम से काम लें। आवेश में आकर विवाद न खड़ा करें। विचार करें कि ऐसा अवसर उसे किस घटना या किस कारणवश मिला। यदि उसमें व्यवहार कुशलता संबंधी भूल रही हो तो उससे बचकर रहें। सुधार करें। यदि बात सर्वथा मनगढ़ंत सुनी-सुनाई है तो समय पाकर आलोचक निंदक से पूछ लेना चाहिए कि आपने इस प्रकार की गलतफहमी किस कारण से क्यों उत्पन्न की, कम से कम एक बार मुझसे बात तो कर लेते भाई! मैं समझता हूं इस प्रकार के व्यवहार से, इस छोटी सी बात से उसका मुख सदैव के लिए बंद हो जाएगा और अपनी गलती महसूस करेगा और यदि उसके द्वारा आलोचना करना सत्य बात है तो अपनी भूल स्वीकार कर आत्म सुधार की बात सोचनी चाहिए भविष्य में ऐसा कार्य न करने के लिए प्रायश्चित करते हुए मन बनाना चाहिए, प्रतिज्ञा करनी चाहिए और आलोचकों निंदकों के लिए भी शुभकामनाएं करनी चाहिए। किसी संस्कृत कवि ने इस विषय पर बहुत सुंदर श्लोक की रचना की है-

जिवन्तु में शत्रुगणा सदैव येषां
प्रसादात सुविचक्षणोऽहम।
यदा यदा मां विकृतिं लभन्ते तदा
तदा मां प्रतिबोधयन्ति॥

मेरे शत्रुगण (आलोचक) हमेशा जियें। फूलें-फलें, जिनके प्रसाद कृपा से मैं अच्छी प्रकार देखता हूं। अपना आत्म निरीक्षण करता हूं। जब जब मुझे विकृति जीवन में कमी प्राप्त होती है तब-तब मुझे प्रतिबोध कराते हैं (सावधान करते समझाते हैं)।

मान्यवर बंधुओं! आलोचना में कही गई बातों को सत्यता की कसौटी पर कसने का प्रयत्न करें। प्रायः बातें असत्य होती हैं। कभी-कभी आलोचना को स्वीकार कर लेना भी उचित होता है। यदि सत्य है तो स्वीकार करके सुधार करना चाहिए। निरर्थक आलोचना को महत्व ना देकर मन को अशांत न करें, सत्य पथ पर निरंतर आगे बढ़ते चले, और आलोचना की विश्वसनीयता को परखें जीवन में अनेकों बार ऐसा देखने को मिला है कि लोग आपकी उन्नति को सहन नहीं कर पाते और केवल मात्र ईर्ष्यावश या लड़ाकर तमाशा देखने के लिए ही आलोचना करते हैं इस प्रकार की बातों पर कभी भी ध्यान नहीं देना चाहिए। आलोचना से स्वयं का सुधार करने का शुभ अवसर मिलता है और अपने पराए का ज्ञान होता है। **महात्मा कबीर कहते हैं-निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छबाय। बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुभाय॥** विषय अधिक ने बढ़ाते हुए अंत में यही निवेदन है कि जीवन आनन्द से जीने के लिए ईर्ष्या द्वेष की भावना को त्याग कर

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधु साधुना जयेत।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन नानृतम्॥

मनुष्य को चाहिए क्रोध को शांति से जीते, बुराई को भलाई से जीते, कंजूसी को दानशीलता से जीते और झूठ को सत्य से जीते, आलोचक को द्वेष से नहीं प्यार से जीते।।

-धर्ममुनि

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

प्रभु को हृदयासन पर आसीन करें

- महात्मा चैतन्यमुनि

वेदादि समस्त ग्रन्थों के अनुसार परमात्मा को प्राप्त करना ही मानव-जीवन का प्रमुख लक्ष्य है। जीव जन्म-जन्मान्तरों से आनन्द एवम् मुक्ति के लिए भटक रहा है। परमात्मा का सान्निध्य ही मुक्ति है तथा यही विद्या भी है। इसकी प्राप्ति के लिए हमें अपना यह रथ भीतर की ओर मोड़ना पड़ेगा। यदि अब तक हम मात्र शारीरिक भोगों की तृप्ति के लिए ही जीए हैं तो अब हमें आत्मिक स्तर पर जीना होगा। आज मानव बार-बार भोगों में डूबकर उनमें तृप्ति ढूढं रहा है मगर उसे तृप्ति मिल नहीं पा रही है। उसे इस सत्य का परिचय बार-बार मिल भी रहा है कि इन भोगों में तृप्ति नहीं है मगर कितना आश्चर्य है कि वह अन्धों की तरह तृप्ति के लिए बार-बार उन्हीं भोगों की शरण में जा रहा हैं। भोग तो स्वयं ही पुकार-पुकार कर व्यक्ति को कह रहे हैं कि हममें तुम्हें तृप्त करने की शक्ति नहीं है मगर व्यक्ति समझ नहीं रहा है। परिणाम यह होता है कि भोगों को भोगते व्यक्ति की तृष्णा और अधिक बढ़ती जाती है। इसी तथ्य को मनु महाराज ने इस प्रकार से स्पष्ट किया है-

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवत्मेव भूय ऐंवाभिवर्धते।।

(मुन. 02-94)

अर्थात् यह निश्चय जानिए कि जैसे अग्नि में ईधन और घी डालने से अग्नि की ज्वाला और अधिक बढ़ जाती है वैसे की कामों के उपभोग से कभी भी काम शान्त नहीं होता है बलिक निरन्तर बढ़ता ही जाता है। मनु महाराज जी की ये पंक्तियां उन लोगों के लिए कितनी बड़ी चेतावनी है जो कामनाओं की शरण में बार-बार जाकर तृप्ति पाना चाहते हैं। यही नहीं हमारे ऋषि-मुनियों और महापुरुषों ने अपने जीवन के अनुभव के आधार पर ऐसे तथ्य हमारे समक्ष रखे हैं जिनपर चिन्तन करने से हम अपनी जीवन नौका को सही दिशा में ले जाकर प्रभु प्राप्ति और मुक्ति तक पहुंच सकते हैं। भ्रतृहरि जी ने कहा है-

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता,
तपो न तप्तं व्यमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः,
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।।

अर्थात् हम सांसारिक विषयों का भोग नहीं करते हैं मगर उन भोगों को प्राप्त करने की चिन्ता ने हमें भोग लिया है। हमने तप नहीं बल्कि आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ताप जीवन भर हमको ही तपाते हैं। भोगों को भोगते-भोगते हम काल को नहीं काट पाए प्रत्युत काल ने हमें ही नष्ट कर दिया। इसी प्रकार भोगों को प्राप्त करने स्वरूप तृष्णा तो बूढ़ी नहीं हुई हम ही बूढ़े हो गए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक दुःखों का 'त्रिताप' के रूप में वर्णन किया है और इनसे छूटने को ही मोक्ष संज्ञा दी है। सांख्यकार का कथन भी है-**अथ त्रिविध दुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः (1-1)** अर्थात् तीन प्रकार के दुःखों की अतिशय निवृत्ति मोक्ष है। दुःखों से छूटने का प्रभु-भक्ति के अतिरिक्त और कोई भी मार्ग नहीं है....क्योंकि बड़े से बड़ा सांसारिक सुख भी दुःखमिश्रित होता है..... उपरोक्त विवेचन से भी यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है कि परमात्मा की प्राप्ति के विना दुःखों से निवृत्ति नहीं हो सकती है। वेद मन्त्र में भी इसी बात की घोषणा की गई है-

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तं आदित्यवर्णं तमसः परस्तात।
त्मेव विदित्वाऽति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।

(यजु. 031-18)

इसका भावार्थ है कि सब मनुष्यों को उचित है कि उस परमात्मा को अवश्य जाने क्योंकि वह परमात्मा बड़ों से भी बड़ा है और उसके बराबर कोई नहीं है। आदित्यादि का रचक और प्रकाशक वही एक परमात्मा है तथा वह सदा प्रकाशस्वरूप

है। वह समस्त अविद्यादि दोषों से दूर है....उसे जाने विना मृत्यु आदि दु:खों से बचना संभव नहीं....विना परमेश्वर की भक्ति और उसके ज्ञान के मुक्ति का मार्ग कोई नहीं है। यह एक अकाट्य सिद्धान्त है तथा इसे आत्मना हृदयंगम करके चलने की आवश्यकता है। अन्य कोई मार्ग दु:खों से मुक्ति का और कोई है ही नहीं। व्यक्ति सब प्रकार के दु:खों और बार-बार के जन्म मरण आदि के चक्कर से परमात्मा को प्राप्त करके ही छूट सकता है। वेद में ही अन्यत्र प्रभु-प्राप्ति के लिए बहुत ही सुन्दर कुछ सूत्र इस प्रकार दिए हैं-

अंजन्ति यं प्रथयन्तो न विप्रा
वपावन्तं नाग्निना तपन्त:।
पितुर्न पुत्र उपसि प्रेष्ठ आ घर्मो
अग्निमृतयन्नसादि॥

ऋ.5-43-7

मन्त्र में कहा गया है **(अंजन्ति यम् प्रथयन्तो)** हम प्रभु के द्वारा दी हूई शक्तियों का विस्तार करें। परमात्मा ने हमें अनेक प्रकार के भौतिक पदार्थ प्रदान किए हैं। हमें शारीरिक एवं मानसिक शक्तियां प्रदान की है। साधक को चाहिए कि वह इन समस्त भौतिक सम्पदाओं का तथा अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का प्रयोग प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए ही करे..... आगे कहा गया कि **(विप्रा:)** अपना पूर्ण कने वाले, न्यूनताओं को दूर करने वाले बनें अर्थात् प्रभु-प्राप्ति के लिए साधक को अपने समस्त अभद्रों को निरन्तर दूर करते रहना चाहिए और समस्त भद्रों का ग्रहण करते रहना चाहिए..... साधक में जितनी-जितनी भद्रता का उदय होगा उतना-उतना ही वह प्रभु के समीप से समीपतर होता जाएगा। (अग्निना तपन्त:) ज्ञानाग्नि से अपने को दीप्त करें..... साधक को चाहिए कि वेदादि आर्ष ग्रन्थों तथा मोक्ष-शास्त्रों का निरन्तर स्वाध्याय करते हुए निरन्तर सत्य-असत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करता चले....(प्रेष्ठ: पुत्र उपसि) जैसे पिता की गोद में जाते हैं वैसे उस पिता की गोद में जाएं.... ऐसी स्थिति तभी प्राप्त हो सकेगी जब साधक अपने को पवित्रता के साथ जोड़ता चला जाएगा तथा निरन्तर उपासना करता रहेगा। प्रभु की स्तुति, प्रार्थना और उपासना से ही हम पिता की गोद को प्राप्त कर सकते हैं अन्य कोई भी मार्ग नहीं है.... आगे कहा गया है **(घर्म: ऋतयन्)** सोम का रक्षण करते हुए यज्ञ की कामना करें अर्थात् ब्रम्हचर्य का पालन करते हुए सदा यज्ञादि परोपकार के कार्यो में लगा रहे। साधक को अपने आप को प्राणीमात्र की सेवा के लिए समर्पित करना चाहिए क्योंकि इससे भी प्रभु का सान्निध्य प्राप्त करने की पात्रता प्राप्त होती है..... और फिर इस प्रकार अर्थात् उपरोक्त साधनों से **(अग्निना आ असादि)** उस अग्रणी प्रभु को हृदयासन पर आसीन करें।

मुक्तक

अपने मन को विषयों में भरमाता है क्यों?
भला आग यह भयंकर लगता है क्यों?
अपने भीतर तृप्ति का सागर खोज जोगी-
इस तरह दर-दर अलख जगाता है क्यों?

जहां भी सत्ता का झण्डा है,
वहां-वहां काला धंधा है।
झूठ की गर्दन पर मालाएं-
सत्य के हिस्से बस फन्दा है।

कुटिलताओं में पलकर व्यक्ति सलामत हुए हैं,
अपने ही हथियारों से स्वयं हताहत हुए हैं,
दिल से वैरागी हो ऐसा तो मिला नहीं कोई-
चोला बदल-बदलकर हर कोई यहां तथागत हुए हैं।

रोशनी की तलाश में केवल स्याहियां मिली,
दिल को जलाने से बस चन्द रूबाईयां मिली।
बहुत पुकारा राह में साथ के लिए हमने-
दुनियां की इस भीड़ में हमें तन्हाईयां मिली॥

- महर्षि दयानन्द धाम, महादेव सुन्दर नगर, हि.प्रदेश

ऋत सत्य और सत्य का रहस्य

– पं. उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

ऋत सत्यः- ईश्वर ऋत सत्य है और भूत, भविष्य व वर्तमान का व्यवहार ऋत सत्य में नहीं होता है। वह तीनों कालों के चपेट में नहीं आता है। अतः सत्य शब्द केवल मनुष्य से ही सम्बन्ध रखता है। ईश्वर से नहीं और सत्य सदैव ऋत सत्य की अपेक्षा असत्य होता है। संसार के सारे व्यवहार सत्य के आधार पर होते है वहा संयोग व वियोग अवश्य होता है। परन्तु ईश्वर रूपी ऋत सत्य में संयोग, वियोग नहीं होता है, सदैव संयोग रहता है। अतः वास्तिविक सत्य तो ऋत सत्य है। हम संसार में जो-जो पदार्थ प्राणियों के कल्याण के लिए ईश्वर द्वारा प्रदत है उनके गुण कार्य स्वभाव सदैव एक रस रहते हैं वह कभी नहीं बदलते है जैसे सूर्य का प्रकाश, चन्द्रमा की शीतलता, वायु का प्रवाह, अग्नि की उष्णता, जल की प्राणादायिनी शक्ति, धरती की ऊर्जा शक्ति, फलों में खटास, मिठास, उसी में अन्दर बीज की उत्पत्ति तथा ब्रह्ममण्ड की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय, प्राणियों में उत्पत्ति में की स्वभाविक प्रवृति, शरीर के इन्द्रियों के गुण कार्य कभी नहीं बदलते, प्राणियों का जन्म व मृत्यु नियमानुसार, आत्मा की नित्यता, आदि में सम्पूर्ण ब्रह्ममण्ड में अदृश्य रूप से ऋत सत्य व्यवहार कार्य कर रहा है। इसलिए यह गूढ रहस्य हैं। ऋत सत्य द्वारा पदार्थो के गुण हमें सहज में प्राप्त हो रहे है इसलिए उनके प्रति हमारा ध्यान नहीं जाता है। इसलिए जीवन दायिनी पदार्थ ऋत सत्य सदैव हमें प्राप्त हैं वह ईश्वर द्वारा प्रदत हैं।

सत्य- मानवीय जगत् में व्यवहारिक रूप में जो-जो कर्म किये जाते हैं यदि वह कार्य आदान प्रदान में सच्चे हैं तो वह सत्य हैं यदि व्यवहार में छल कपट है तो असत्य, हैं मानवीय जगत् में 'कर्म' गुण कर्मानुसार बदलते रहते हैं। यदि मानवीय व्यवहार में प्रत्येक कर्म को सच्चाई से सत्य के आधार पर किये जाए, तो शान्ति बनी रहती है। ईश्वर ने मानव को कर्म करने को स्वतन्त्र रखा है, और सत कर्म और असत्य कर्म मनुष्य के विवेक, पर निर्भर होते हैं तथा व्यवहारिक सत्य देश कालपरिस्थितिनुसार बदलता रहता है।

जरा गहराई से विचार करें तो संसार में जो हमें दीखता है वह असत्य है और जो नहीं दिखता वही सत्य है। जो चलायमान है वह अस्थिर है, परिवर्तनशील है। वास्तव में वह अचलायमान स्थिर तथा अपरिवर्तन शील तत्व के आधार पर टिका हुआ है। हर गति तथा अगतिशिलता अचल, स्थिर अप्रवर्तन शील तत्व के कारण टिकी हुई है। जैसे वृक्ष दृश्य है तो बीज अदृश्य है। शरीर दृश्य है तो आत्मा अदृश्य है। इसी प्रकार संसार के प्रत्येक दृश्य परिवर्तन शील है और उसके आधार ईश्वर और उसके गुण अपरिवर्तन शील है। आइए विचार करते हैं।

आत्म श्रधा का आधार सत्य है- भारतवर्ष का इतिहास बताता है कि महाभारत काल के बाद ईश्वरीय धर्म वेदानुकूल प्राचीन, पद्धति के अनुसार, सत्य पर आधारित मान्यताओं को सदैव के लिए प्रचारित करने के लिए एक सत्य का मंच आर्य समाज के संस्थापक, एक मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी थे। उन्होंने दो कार्य बहुत ही उत्तम सर्वहितकारी किये एक सत्यार्थ मार्ग जानने हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की और दूसरा कार्य मानव जीवन को सुखी व सत्यमार्गी बनाने के लिए संस्कार विधि अर्थात् जन्म से मृत्यु तक 16 संस्कारों को करने का विधान किया।

प्रत्येक मनुष्य की अपनी आत्म श्रद्धा या आत्म गौरव की एक तोल होती है, यह तौल क्या हैं अपनी वाणी विचार और क्रिया के सत्य असत्य के विवेचन का वह एक माप है, जिसमें वह अपने सम्बन्ध की मान्यता को स्थिर करता है। मनुष्य जितना सत्य से विमुख उतना ही अपने आप में अश्रधालु बनता है। जिसने सत्य का परित्याग कर दिया समझो उसने अपने लिए सुख का मार्ग अवरूद्ध

कर दिया।

''सत्यमेव जयते नानृतम'' सत्य की जय होती है असत्य की नहीं, सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। आत्मा स्वयं शाश्वत सत्य है। सत्य सरल भी है और स्वाभाविक भी है। यदि तुच्छ अहंकार और स्वार्थ मयता को प्रमुख न बनाया जाए तो सत्य तथ्य छिपाने की आवश्यकता ही न पड़े। सत्य की अभिव्यक्ति से ही जीवन की जटिलता का समाधान हो सकता है।

आत्मा के ऐश्वर्य और सत्य के शाश्वत स्वरूप को शाश्वत बनाए रखने के लिए, सत्य बोलना, सत्य पर चलना, ऋत सत्य पर आधारित मान्यताओं को मानना ही जीवन का अर्थात् जीव का प्रमुख कृत्य है। सत्यधारी को ईश्वर को ढूंढने जाने के लिए भटकने की आवश्यकता नहीं है वह आत्मा में ही ईश्वरीय दर्शन का आनन्द लेता है। सत्य जीवन की मधुरता है जीवन की पूर्णता है।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप।।

हम असत्य को सत्य अस्थिर परिवर्तनशील को अपरिवर्तन शील, क्षण भंगुर को सनातन और प्रतीतो के प्रति जागे हुए हैं और प्राप्त के प्रति सोए हुए हैं। असत्य के प्रति जागे हुए हैं और सत्य के प्रति सोये हुए हैं। असत्य के प्रति जागे हुए हैं और स्थिर के प्रति सोये हुए हैं। जीवन का लक्ष्य सत्य जानना है। हमारा जीवन असत्य में बीत रहा है, हम चारों और से असत्य से घिरे हुए हैं। क्योंकि ऋत सत्य सर्वव्यापक हैं और निकटतम होने के कारण अदृश्य हैं। सत्य हमारे जन्म से पहले भी था और हमारी मृत्यु के बाद भी रहेगा, इसलिए हमारी खोज का विषय-ऋत सत्य ही होना चाहिए।

सत्य असत्य के मूलगत भेद क्या हैं- विश्व ऋत सत्य के आधार पर टिका हुआ है। असत्य वस्तु असत्य विचार, असत्य संस्था के भीतर उसके तोड़ने वाले तत्व रहते हैं, इसी के अन्तर्द्वन्द कहते हैं। असत्य के पेट में पड़ा जो अन्दर का विरोध है, वह सत्य को धीरे-धीरे फोड़ता जाता है और असत्य के भीतर सत्य अपने पैने पन से उभर आता है। क्योंकि सत्य दुविधा रहित व द्वेष रहित होता है। जहां भीतर सत्य और असत्य होंगे वहीं तो संघर्ष होगा। हमने जितनी भी संस्थाऐं व धर्म सम्प्रदाय बनाए हैं उनका प्रमुख लक्ष्य सत्य को टूटना है। कोर्ट में वकील सत्य को टूटने के लिए ही तो लड़ते हैं और जज का कार्य सत्य असत्य को ढूंड निकालना है। तभी वेदों ने कहा है सारा संसार ऋत सत्य पर टिका हुआ है।

निष्कर्ष- वेद उपनिषद्, दर्शन शास्त्र, ब्राह्मण ग्रन्थ तथा जो वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ है उसमें वर्णित शिक्षा और संसार में सत्यवादी सत्यपथ गामी युग पुरुषों ने सत्य को जाना और प्रचार करते-करते अपने जीवनो की आहूति दे दी। यदि संसार के सभी धर्म सम्प्रदाय संगठन सत्य और ऋत सत्य पर व्यवहारिक चलने का आवाहन करे तो, मानव समाज में तमाम अन्धविश्वास रूढ़ी वादिता उग्रवाद हिंसा द्वेष, समाप्त हो जायेंगे। जिस दिन हम सत्य और ऋत सत्य को समझ जायेंगे और तदानु कुल व्यवहार करने लगगें बस उसी दिन से हम ईश्वर को समझ सकेंगे और तब हम किसी भी जगह खड़े होंगे तो यही कहेंगे सत्यमेव जयते नानृतम।

-गढ़निवास मोहकमपुर, देहरादून-उत्तराखण्ड,
मो. 9411512019, 9557641800

सूचना

माता लक्ष्मी देवी धर्मार्थ ट्रस्ट (पंजीकृत) सामाजिक एवम् शिक्षा के प्रचार प्रसार में कार्यरत है। जरूरतमंद व्यक्ति सम्पर्क कर सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।

निवेदक मैनेजिंग ट्रस्टी

के.बी. कटारिया डॉ. आर.सी. कटारिया
हरदयाल कटारिया

फ्लैट न. 4961, विकासकुंज, विकासपुरी, दिल्ली-110008, दूरभाष-011-25612208

विश्व जनसंख्या (11.07.2017) पर

1. पुरानी कहावत है-"जिसकी जनसंख्या-उसका देश"।
- इसी आधार पर 1739 में भारत से अलग हुआ अफगानिस्तान
- इसी आधार पर 1947 में भारत से अलग हुए पाकिस्तान और बांग्ला देश (पूर्व नाम पूर्वी पाकिस्तान)
- इसी आधार पर 69 वर्षो से कश्मीर घाटी में आतंकवाद-अलगाववाद चरम सीमा पर है।
- इसी आधार पर असम को विभाजित करके नागालैण्ड-मेघालय और मिजोरम नाम के तीन ईसाई राज्य बनाए गए।
2. हमारे नेताओं ने पिछली गलतियों से कुछ नहीं सीखा है और फिर गलतियाँ कर रहे हैं।
3. प्रजातन्त्र में संख्या बल सबसे बड़ा निर्णायक बल है-भाई परमानन्द।
4. धर्म परिवर्तन से राष्ट्रीयता बदल जाती है-वीर सावरकर
5. जब हिन्दू समाज का एक सदस्य मतांतरण करता है तो समाज की संख्या कम होती है और समाज का एक शत्रु बढ़ जाता है-स्वामी विवेकानन्द
6. 712 ई. में पहला हिन्दू मुस्लिम बना।
7. 756 वर्ष के मुस्लिम शासन काल में लाखों हिन्दुओं को मुस्लिम बनाया गया।
8. 150 वर्ष के ब्रिटिश शासन में भी हजारों हिन्दू परिवार ईसाई बने।
9. जम्मू-कश्मीर के हजारों-लाखों परिवारों ने इस्लाम स्वीकार किया।
10. डॉ. फारूख अब्दुल्ला (पूर्व मुख्यमन्त्री) ने कहा है कि उनके पूर्वज सारस्वत ब्राह्मण थे।
11. छत्रपति शिवाजी ने पहली बार दो मुस्लिमों को हिन्दू बनाकर शुद्धि की थी।
12. कश्मीर के हजारों मुस्लिम परिवार पुनः हिन्दू बनना चाहते थे लेकिन तत्कालीन सनातन धर्मी पंडितों ने उनकी शुद्धि करने से मना कर दिया था।
13. उन्नीसवीं शताब्दी में बड़े पैमाने पर शुद्धि शुरु करने का श्रेय आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द को है।
14. भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा 1923 से शुद्धि कार्य कर रही है। शुद्ध होने वालो को वैदिक धर्मी/आर्य समाजी बनाया जाता है।
15. संघ/विश्व हिन्दू परिषद् की धर्म प्रचार समिति बहुत अच्छे स्तर पर शुद्धियां कर रही है। ये शुद्ध होने वालों को प्रायः सनातन धर्मी बनाते हैं।
16. प्रथम जनगणना 1881 में हुई थी। उसके बाद हर 10 वर्ष के बाद जनगणना होती है। 1881 की जनगणना में हिन्दू 80 प्रतिशत थे। 60 वर्षो के बाद 1941 में हिन्दू 74 प्रतिशत रह गए जबकि मुस्लिम 18 से बढ़कर 24 प्रतिशत हो गए।
17. हिन्दू नेताओं ने पिछली गलतियों से कुछ नहीं सीखा। वे फिर गलतियां कर रहे हैं। मुर्दा समाज निराशावादी सोच का हो गया है। मजबूरी में गलतियां करने वालों की ही सहायता करता है। उसे भविष्य की कोई चिन्ता नहीं है।
18. हिन्दू धर्म के संतो-उपदेशकों-साधुओं ने ब्रह्मचर्य-संयम का उपदेश दिया और राजनीति से दूर रहने के लिए कहा जबकि मुस्लिम धर्म के प्रचारकों ने हिंसक-आक्रामक-विस्तारवादी सोच रखते हुए अपनी संख्या बढ़ाने के लिए हर स्तर पर कार्य करने के लिए कहा।
19. स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने वाले और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष करने वाले मूर्ख-अदूरदर्शी आर्यो ने राजार्य सभा नहीं बनाई। हिन्दू महासभा को पसन्द नहीं किया। आर्य विरोधी कांग्रेस पसन्द आई और उसे मजबूज करने में लगे रहे।
20. मुस्लिम लीग के मौ. अली जिन्ना ने हिन्दुओं को बहुत अच्छी राय दी थी कि वे हिन्दू महासभा को अपनी पार्टी माने और वीर सावरकर को अपना नेता माने लेकिन नासमझ हीन भावना से ग्रस्त अदूरदर्शी अहिंसक-बेवकूफ हिन्दू तो कांग्रेस से ही चिपका रहा जिसका दुष्परिणाम 1947 में देखा और कश्मीर में अभी भी देख रहे हैं।
21. विश्व के सबसे प्राचीन हिन्दू धर्म का कोई देश नहीं है जबकि ईसाईयों के 80 तथा मुस्लिमों के 60 देश हैं फिर भी हिन्दू को कोई चिन्ता नहीं है।
22. एक अनुमान के अनुसार खंडित भारत का 22वीं शताब्दी में प्रधानमन्त्री मुस्लिम तथा राष्ट्रपति गोभक्षक ईसाई होगा लेकिन हिन्दू गांधीवादी ही रहेगा।

– इन्द्र देव, म्यांमार वाले (सिद्धान्त भूषण), पूर्व प्रधान नगर आर्य समाज, बुलन्दशहर, मो. 08958778443

बोलना सिखाया जिन्होंने अब उनसे ही बोलते नहीं

- देवनारायण भारद्वाज

"बोलना सिखाया जिन्होंने अब उनसे ही बोलते नहीं" शीर्षक में इंगित समस्या आज की ही नहीं, पुरातन काल से चली आ रही है। भले ही पहले अतिन्यून हो, अब अधिक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से पूर्ण प्रभावित होकर छलेसर के रईस ठाकुर मुकुन्दसिंह ने उनको आग्रहपूर्वक अपने गांव में आमंत्रित किया। हाथी, घोड़ा, पालकी, सैनिक व विशाल जन-समूह के साथ उनका स्वागत किया। उनके प्रवास के लिए नवीन भवन बनवाया। विशेष यज्ञ रचाया। पण्डितों व प्रजापन की वहाँ भीड़ लगी रहीं। इतने कोलाहल में भी ठाकुर मुकुन्दसिंह के पुत्र कुंवर चन्दनसिंह का मौन महर्षि को बहुत अखर रहा था। कारण कुछ भी हो, पिता-पुत्र की बोलचाल बन्द थी। ग्राम में कुंभ जैसा मेला और उसका शोर, फिर भी पिता-पुत्र में मनोमालिन्य बना रहे, महर्षि इस पीड़ा को सहन नहीं कर सके। इन दोनों के सम्मुख वे बोले और ऐसा बोले कि पिता ने निज पुत्र के लिए अपनी बाहें फैला दीं तथा उसे अपनी गोद में बैठा लिया और मन का मैल सदा-सदा के लिए धुल गया।

परमपिता परमात्मा अपने प्रतिनिधिपुत्र सन्तान रूप में भेजकर समाज में श्रेष्ठ वार्तालाप का वातावरण बनाते रहते हैं। जब यही तथाकथित सन्तान स्वार्थी हो जाती है, तो समाज में संवाद समाप्त होकर विवाद-परिवार की वायु बहकर सन्ताप उत्पन्न कर देती है।

विवाह संस्कार के कारण श्रीमती सहित एक उस नगर में जाने का अवसर मिला, जहाँ हम कभी 41 वर्ष पहले गए थे। श्रीमती जी अपनी दूरी की दादी से मिलना चाहती थी और मुझे अपने समवयस्क मित्र से मिलने का आकर्षण था। मित्र मिले, वे उतने ही प्रतिष्ठित व लोकप्रिय मिले, जितने 'राजा साहब' सम्बोधन से जाने जाने वाले उनके पिता थे। जितनी अधिक उनकी भूमि-भवन-धन की सम्पदा थी, उतनी ही उनकी सुकीर्ति व मान्यता भी थी, उन्होंने सर्वत्र मुझको भ्रमण कराया और लेजाकर खड़ा कर दिया, अपने एक पुत्र के प्रतिष्ठान पर और लगे उससे मेरा परिचय कराने।

वह अच्छा खासा समझदार पुत्र न उनसे 'बोला और न मुझसे नमस्ते की। मित्र तो खड़े के खड़े रह गए। किन्तु मुझसे वहां रुका नहीं गया और मैं उनका हाथ पकड़कर आगे आगे बढ़ा लाया। मार्ग में उन्होंने बताया कि इस पुत्र को मुझसे यह आपत्ति है कि पिता की इतनी मान-प्रतिष्ठा होते हुए भी मेरे लिए कुछ नहीं किया।

यह तो मेरी भेंट मित्र से हुई। अब श्रीमती जी की दूर की दादी की कहानी सुनिए। मिलने पहुंची तो उनको घर के बाहर एक टूटी-टाटी खाट पर पड़ा पाया। देखकर उठीं, इनको अपने हृदय से चिपटा लिया। दादी के स्वावलम्बी पुत्र का बाल-बच्चों वाला परिवार था, किन्तु दादी से कोई बोलता तक नहीं।

यह जो हमने दूर के नगर में जाकर देखा, वह हमारे नगर में आसपास भी घटता दिखाई देता रहता है। हम दो ऐसे बच्चों को जानते हैं। एक दूसरे ही वर्ष में चलने और बोलने लगा तथा दूसरे बच्चें ने इन दोनों कार्यो में कई-कई वर्ष लगा दिए। जब यह चलता-बोलता नहीं था, तो माता-पिता एवं परिजन सब व्याकुल रहते थे। उपचार-उपाय खोजते व चिन्तित बने रहते थे। जिन माता-पिता अभिभावकों ने उन्हें बोलने में समर्थ बना दिया, बड़े होकर वही बच्चे अन्य सबसे तो बोलते हैं, पर अपनों से ही नहीं बोलते हैं, तो उनका हृदय टूट जाता है। इसका दूरगामी दुष्प्रभाव ऐसी सन्तानों पर पड़ने से कोई रोक नहीं सकता है। माता-पिता ही क्या उस परमेश प्रभु के साथ भी ऐसे लोगों का यही व्यवहार होता है, जो माता-पिता दोनों के रूप में जन्म देकर पालन-पोषण करता है। प्रभुदेव सविता अग्नि के समक्ष शान्त शीतल जलांजलि पूर्वक व्यक्ति मांग करता है-

वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥ (यजु. 30.1)

अर्थात्-हे वाणी के स्वामी परमेश्वर। आप हमारी वाणी को मधुर बना दीजिए।

जीभ तो मानव-पशु सबके पास है। पशुओं की जीभ तो सदा समान रहती है, किन्तु मनुष्यों की जीभ सदा स्वाद बदलती है। कभी कड़वी, कभी मीठी, कड़वी हुई तो मानो कटार हो गयी, दिल के आर-पार

हो गई, अतः इसका कोमल व मधुर रहना ही ठीक है, प्रभु से यही मांग है। इसी क्रम में अभिभावकों की उत्कट कामना द्रष्टव्य है-

ओ३म् उप नः सूनवो गिरः श्रृणवन्तवमृतस्य ये।
सुमृडीका भवन्तु नः॥

(साम. 1595)

अर्थात् हमारे पुत्रगण अनश्वर परमेश्वर की वाणी सुनें और हम लोगों को सुखी करें। परमेश प्रभु की वाणी वेद का कितना मधुर संदेश है-

ओ३म् उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि।
धनञ्जयो रणे रणे॥ (साम.1382)

मन्त्र-भावार्थ देखिए
क्षण-क्षण सम्मुख रण आते हैं।
धन, जय प्रभु ही दिलवाते हैं।
प्रभु हमको शक्ति विमल देते,
हम जिससे शत्रु मसल देते।
प्रभु ने जीवन धाम दिया है।
प्रभु ही इसको चमकाते हैं।।
जीवन्त प्राणधारी आओ,
प्रभु से सम्पत्ति ले जाओ।
बैठो प्रभु से करो वार्ता,
सन्मार्ग वही दिखलाते हैं।।
जिसने निज को उत्कृष्ठ किया,
हर कष्ट सहनकर पुष्ट किया।
वे नर जीवन संग्रामों में,
प्रभु की सहाय पा जाते हैं।।
क्षण-क्षण सम्मुख रण आते हैं,
धन, जय प्रभु ही दिलवाते हैं।।

'सामश्रवा' के देवातिथि द्वारा रचित सामगीत में सन्देश निहित है कि जिस प्रभु से हम हर संग्राम में विजय और वैभव प्राप्त करने की कामना करते हैं, और वह हमें सुलभ भी हो जाता है। इस ऋद्धि-सिद्धि उपलब्धि के बाद अधिकांश व्यक्ति इसी में रम जाते हैं। इसकी ही बात करते रहते हैं। प्रभु से बात करने का उनके पास समय ही नहीं बचता है। मन्त्र का मृदुल आदेश है कि इसे मांगने व मिल जाने के बाद भी प्रभु से बात करते रहो, स्तुति करके धन्यवाद देते व आशीर्वाद लेते रहें।

परमेश प्रभु की ही भांति हमारे पितर जन भी हमें सब कुछ देते हैं। तन देते हैं, सुसंस्कृत मन देते हैं, यथासंभव धन देते हैं, विद्या और गुण देते हैं, फिर भी हम सर्वसमृद्ध करके चिर-विदा लेकर चले ही जाने वाले हैं, फिर हम उनसे बात न करें, तो इसे हमारा अधर्माचरण ही कहा जाएगा।

यहां पर हिन्दी के प्रसिद्ध रसिक कवि बिहारी जी का एक दोहा उद्धृत किया जा रहा है, जो इस प्रकार से दो अर्थ प्रस्तुत करता है कि एक ओर तो वे अपने आराध्य श्रीकृष्ण का तथा दूसरी आरे अपने वंश व पिता का स्मरण भी कर लेते हैं। लीजिए पढ़िये-

प्रगट भए द्विजराज-कुल, सुबस बसे व्रज आठ।
मेरे हरो कलेश सब, केशव के सबराइ॥

दोहे में प्रयुक्त 'द्विजराज' शब्द द्वि अर्थक है-एक चन्द्रमा व दूसरा ब्राह्मण। दोहे का एक अर्थ बनता है कि-केवल कृष्ण चन्द्रकुल में जन्म लेकर ब्रह्मभूमि में बस रहे हैं वे मेरे सभी कष्टों को दूर करें। दूसरे अर्थ में वे अपने पिताश्री को आराध्यतुल्य स्मरण करते हुए कहते हैं, कि-मैं भी ब्राह्मण कुल भूषण ब्रजवासी हूँ मेरे जन्मदाता केशवराय मेरे कष्टों को दूर करें।

कभी-कभी ऐसा कुयोग भी आ जाता है, जब संतान से पितर वृद्धजन अपनी ओर से बोलना बंद कर देते हैं, वह भी जरा से भ्रम के कारण।

एक माता के तीन पुत्रियाँ एवं एक पुत्र था। किशोरवस्था में पुत्र नहीं रहा। उनका बड़ा दामाद उनका मातृवत् सम्मान करने वाला है। एक बार अपना भोजन साथ लेकर वह दामाद के घर गयीं। सदैव की भांति दामाद ने स्वागत अभिवादन किया और उनसे भोजन करने के लिए जोरदार आग्रह करने लगा। माता मना करती रहीं। दामाद के मुख से निकले शब्द-'आपके कोई है नहीं, इसलिए मैं आपसे खाने के लिए कह रहा हूँ। कोई होता तो भला मैं क्यों कहता'?

उस माता के हृदय में यह शब्द ऐसे चुभ गए कि कई महीनों तक उस माता ने अपने दामाद से बोलचाल बंद रखी। दामाद को स्थिति का आभास हुआ। अनेक प्रकार से उसने बोलना चाहा, किन्तु माता का मुँह बंद का बंद ही रहा। माता ने यह स्थिति मुझे बताकर कुछ परामर्श चाहा, तो मैंने कवि रहीम के शब्दों को-'क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात'।

दोहरा दिया। तभी माताजी ने कहा कि अब तो वे मुझे अपने बच्चों के साथ तीर्थ यात्रा पर ले जाना चाहते हैं। ठीक ही है, सुखद अन्तराल में दुःखद बात

बोलना सिखाया जिन्होंने अब उनसे ही बोलते नहीं

- देवनारायण भारद्वाज

''बोलना सिखाया जिन्होंने अब उनसे ही बोलते नहीं'' शीर्षक में इंगित समस्या आज की ही नहीं, पुरातन काल से चली आ रही है। भले ही पहले अतिन्यून हो, अब अधिक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से पूर्ण प्रभावित होकर छलेसर के रईस ठाकुर मुकुन्दसिंह ने उनको आग्रहपूर्वक अपने गांव में आमंत्रित किया। हाथी, घोड़ा, पालकी, सैनिक व विशाल जन-समूह के साथ उनका स्वागत किया। उनके प्रवास के लिए नवीन भवन बनवाया। विशेष यज्ञ रचाया। पण्डितों व प्रजापन की वहाँ भीड़ लगी रहीं। इतने कोलाहल में भी ठाकुर मुकुन्दसिंह के पुत्र कुंवर चन्दनसिंह का मौन महर्षि को बहुत अखर रहा था। कारण कुछ भी हो, पिता-पुत्र की बोलचाल बन्द थी। ग्राम में कुंभ जैसा मेला और उसका शोर, फिर भी पिता-पुत्र में मनोमालिन्य बना रहे, महर्षि इस पीड़ा को सहन नहीं कर सके। इन दोनों के सम्मुख वे बोले और ऐसा बोले कि पिता ने निज पुत्र के लिए अपनी बाहें फैला दीं तथा उसे अपनी गोद में बैठा लिया और मन का मैल सदा-सदा के लिए धुल गया।

परमपिता परमात्मा अपने प्रतिनिधिपुत्र सन्तान रूप में भेजकर समाज में श्रेष्ठ वार्तालाप का वातावरण बनाते रहते हैं। जब यही तथाकथित सन्तान स्वार्थी हो जाती है, तो समाज में संवाद समाप्त होकर विवाद-परिवार की वायु बहकर सन्ताप उत्पन्न कर देती है।

विवाह संस्कार के कारण श्रीमती सहित एक उस नगर में जाने का अवसर मिला, जहाँ हम कभी 41 वर्ष पहले गए थे। श्रीमती जी अपनी दूरी की दादी से मिलना चाहती थी और मुझे अपने समवयस्क मित्र से मिलने का आकर्षण था। मित्र मिले, वे उतने ही प्रतिष्ठित व लोकप्रिय मिले, जितने 'राजा साहब' सम्बोधन से जाने जाने वाले उनके पिता थे। जितनी अधिक उनकी भूमि-भवन-धन की सम्पदा थी, उतनी ही उनकी सुकीर्ति व मान्यता भी थी, उन्होंने सर्वत्र मुझको भ्रमण कराया और लेजाकर खड़ा कर दिया, अपने एक पुत्र के प्रतिष्ठान पर और लगे उससे मेरा परिचय कराने।

वह अच्छा खासा समझदार पुत्र न उनसे 'बोला और न मुझसे नमस्ते की। मित्र तो खड़े के खड़े रह गए। किन्तु मुझसे वहां रुका नहीं गया और मैं उनका हाथ पकड़कर आगे आगे बढ़ा लाया। मार्ग में उन्होंने बताया कि इस पुत्र को मुझसे यह आपत्ति है कि पिता की इतनी मान-प्रतिष्ठा होते हुए भी मेरे लिए कुछ नहीं किया।

यह तो मेरी भेंट मित्र से हुई। अब श्रीमती जी की दूर की दादी की कहानी सुनिए। मिलने पहुंची तो उनको घर के बाहर एक टूटी-टाटी खाट पर पड़ा पाया। देखकर उठीं, इनको अपने हृदय से चिपटा लिया। दादी के स्वावलम्बी पुत्र का बाल-बच्चों वाला परिवार था, किन्तु दादी से कोई बोलता तक नहीं।

यह जो हमने दूर के नगर में जाकर देखा, वह हमारे नगर में आसपास भी घटता दिखाई देता रहता है। हम दो ऐसे बच्चों को जानते हैं। एक दूसरे ही वर्ष में चलने और बोलने लगा तथा दूसरे बच्चें ने इन दोनों कार्यो में कई-कई वर्ष लगा दिए। जब यह चलता-बोलता नहीं था, तो माता-पिता एवं परिजन सब व्याकुल रहते थे। उपचार-उपाय खोजते व चिन्तित बने रहते थे। जिन माता-पिता अभिभावकों ने उन्हें बोलने में समर्थ बना दिया, बड़े होकर वही बच्चे अन्य सबसे तो बोलते हैं, पर अपनों से ही नहीं बोलते हैं, तो उनका हृदय टूट जाता है। इसका दूरगामी दुष्प्रभाव ऐसी सन्तानों पर पड़ने से कोई रोक नहीं सकता है। माता-पिता ही क्या उस परमेश प्रभु के साथ भी ऐसे लोगों का यही व्यवहार होता है, जो माता-पिता दोनों के रूप में जन्म देकर पालन-पोषण करता है। प्रभुदेव सविता अग्नि के समक्ष शान्त शीतल जलांजलि पूर्वक व्यक्ति मांग करता है-

वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥ (यजु. 30.1)

अर्थात्-हे वाणी के स्वामी परमेश्वर। आप हमारी वाणी को मधुर बना दीजिए।

जीभ तो मानव-पशु सबके पास है। पशुओं की जीभ तो सदा समान रहती है, किन्तु मनुष्यों की जीभ सदा स्वाद बदलती है। कभी कड़वी, कभी मीठी, कड़वी हुई तो मानो कटार हो गयी, दिल के आर-पार

आज के विकृत संस्कार

संतति के उत्कृष्टता के लिए जन्मदाता उत्तरदायी एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

- पं. उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

आज भारत की शिक्षा पद्धति का उद्देश्य भौतिक है। शिक्षा से मानव में सत्य व आध्यात्म का संस्कार बनता है, आज नैतिक शिक्षा का आधार संसार खो चुका है। जब युवा 25 वर्ष पढ़-लिख कर व्यवसाय में उतरता है तो कोई डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील, साइंटिस्ट आदि-आदि बन जाता है। किन्तु नैतिक व आध्यात्मिक संस्कार न होने के कारण वह अपने-अपने व्यवसाय में भ्रष्टाचार करना शुरु कर देता है, और सारा सामाजिक वातावरण दूषित हो जाता है और मानवता की जगह दानवता पनपने लगती है। आज आवश्यकता है बच्चों को शुरु से ही वैदिक, सात्विक संस्कारों की शिक्षा दी जाये, ईमानदारी और सदाचार का पाठ पढ़ाया जाये। मेरे अनुभव के आधार पर दूसरी सामाजिक व्यवस्था व संस्कारों का कारण है। झूठी मर्यादा का जाति वर्ग का संस्कार। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी, अंग्रेजी के घर जन्म लेता है तो मां के पेट से ही उसमें कथित धर्म के संस्कारों का समावेश हो जाता है, और पैदा होने पर से ही उस पर वही मान्यता धर्म संस्कारों को थोपा जाता है, और वह जीवन भर वही भाषा व धर्ममत संस्कार मानता है, और उसी मान्यता को अपनी मर्यादा व हठधर्मी का व्यवहार करता है। परिणामस्वरूप अलग-अलग धर्म संस्कारों के कारण कत्लेआम, मारपीट, मानवों में अत्याचार, घोर अंधविश्वासों की मान्यताएँ मान कर संसार में अशांति फैली हुई है और सारा संसार बारूद के ढेर पर बैठा है। सुसन्तति की उपयोगिता सभी समझते हैं पर उसके लिए माता-पिता बनने वाले अपना स्तर ऊँचा उठाने का प्रयत्न नहीं करते। वैज्ञानिकों का इस सन्दर्भ में जींस को उत्तरदायी बताना है, और उनका मानसिकता सत्य और संस्कारित होना आवश्यक है।

उत्तम भविष्य के लिए सुप्रजनन भी आवश्यकः आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी समाज में आदर्श समाज चाहते थे इसीलिए उन्होंने मानवों के उत्तम संस्कारों पर बल दिया। उन्होंने संस्कार विधि बनाकर सोलह संस्कारों की आज्ञा दी जो जन्म से मृत्यु तक एक आदर्श समाज दे सकते हैं। महर्षि दयानन्द जी का सोचना था कि देव मानवों का निर्माण सुगढ़ सुसंस्कारी दम्पति ही कर पाते हैं। उच्च संस्कारों अर्थात् वेदानुकूल संस्कारों के बिना सुसंतति को जन्म देना सम्पन्न नहीं है।

उच्च संस्कारों की नई पीढ़ी ही परिष्कृत बीज कोषों से उत्तम संतति जनेगीः स्वयं विद्वान बनने के लिए अध्ययन, अभ्यास, स्वाध्याय और कला कौशल की प्रवीणता के लिए सुसंस्कारवान बनना आवश्यक है। प्रजनन का उत्तरदायित्व वहन करने के लिए भूतकाल में मात्र शुक्राणु और डिम्बकीट के सम्मिलन को श्रेय दिया जाता रहा है। पर अब उसके भीतरी अति सूक्ष्म घटको का पता चला है जिन्हें गुणसूत्र कहा जाता है। इन्हें इलेक्ट्रान, प्रोट्रोन, न्यूट्रान, पाजिट्रान आदि नामों से जाना जाता है। ठीक इसी प्रकार अब प्रजनन घटक शुक्राणु डिम्बाणु के भीतर पाये जाने वाले सूक्ष्म गुण सूत्र न केवल प्रजनन के वरन वंश परम्परा के साथ लिपटी हुई अनेकानेक क्षमताओं एवं विशेषताओं को हस्तांतरित करने वाले माने गये हैं।

व्यक्तित्व मात्र वंश परम्परा से नहीं बनताः शरीर के बाहरी अवयव तो जाने-पहचाने हैं, पर उनके भीतर छोटे-छोटे अरबों-खरबों जीव कोशों की श्रृंखला विद्यमान है। ये सभी अपने-अपने निधारित कार्यो में लगे रहते हैं। इन कोशाओं के भीतर एक विशाल भंडार विद्यमान है। इनके भीतर गुणसूत्रों के ऐसे घटक रहते हैं जो प्रजनन प्रक्रिया में काम आते हैं। नर-नारी दोनों में यह घटक रहते हैं। दोनों पक्ष आपस में गुंथ कर एक नई सृष्टि का आरम्भ करते हैं। भ्रूण की स्थापना इसी आधार पर होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार शिशुओं का जन्म और उनकी विशेषता इन्हीं छोटे-छोटे इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप से देख जाने वाले घटकों की विकसित

विस्मृत होना असंभव नहीं है। धर्म के दश लक्षणों में 'क्षमा' विलक्षण है और सभी एक पक्षीय हैं, पर क्षमा द्विपक्षीय है। क्षमा मांगने वाला धर्म का पालन करता है और क्षमा करने वाला सधर्म का परिपालन करता है। बड़े लोग किसी भी कारण से बोलना बन्द करने के स्थान पर अपनी सकारात्मक सोच विकसित करके प्रकरण की नकारात्मकता को तिरोहित करके, अपने छोटों को सन्मार्ग दिखाने का सत्प्रयास कर सकते हैं।

उपरोक्त प्रकरण में घोर निराशा को घनघोर आशा में इन्हीं माताजी के शब्दों ने बदल दिया। वे बोली कि-कुछ दिनों के लिए बाहर क्या चली गयी, पड़ौसी बच्चों ने छत पर कूछ-फाँदकर सीमेंट उखाड़ दिया। जरा-सी वर्षा में छतें टपकने लगती हैं। प्रयोग में न जाने से हस्तचालित नल ने पानी देना बन्द कर दिया और शौचालय में पानी नहीं। एक अकेले के लिए हजारों रूपये व्यय करके ठीक कराये, फिर चले जाएँ बाहर तीर्थ यात्रा पर। लौटकर आएँ तो वहीं 'ढाक के तीन पात' मैंने उससे कहा कि-यह सब अव्यवस्थाएं इसीलिए हुई हैं कि आप दामाद का आमन्त्रण स्वीकार कर कुछ दिन बाहर तीर्थाअन कर आएँ। जब लौटकर आयेंगे, तो तीन दिन में ही यह सब बिगड़े काम बन जायेंगे और सम्बन्ध स्नेहपूर्ण सामान्य हो जायेंगे। शायद प्रभु भी यही चाहते हों। माताजी जो सुस्त-मुस्त आयी थीं, मस्त-चुस्त मुस्कराती चली गयीं।

ओ३म् कहो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना। धियों विश्व वि राजति।। (ऋक् 1.3.12)

इस मन्त्र के अनुसार ज्ञान देवी सरस्वती की उपासना से ज्ञान के महासागर का आभास मिलता है। जो माता सरस्वती के ज्ञान-ध्वज के नीचे आ जाते हैं, वे अपनी सब बुद्धियों को विशेषतया दीप्त करके जिस-जिस वस्तु की गहराई में जाना चाहते हैं, उस-उस वस्तु के तत्वबोध को प्राप्त कर लेते हैं। गहराई में उतरने वालों को सब कुछ मिल जाता है और किनारें बैठे रहने वाले इधर-उधर ताकते रह जाते हैं, कहा भी है-

सरस्वती के भंडार की, बड़ी अपूरब बात।
खर्चे से घटती नहीं, बिन खर्चे घटि जात।।

शून्य से शिखर पर पहुँचने वाले व्यक्तियों की सन्तानें उनकी प्रतिष्ठा को तो देखती हैं, उनकी त्याग-तपसया-श्रम व पुरुषार्थ को नहीं देख पातीं। सन्तानों की अभिलाषा रहती है कि वे भी प्रतिष्ठा पाएँ, परन्तु अपने बल पर नहीं, पूर्वजों की प्रतिष्ठा के बल पर। उदाहरण स्वरूप-एक कथानक प्रस्तुत है-

पर्वतीय क्षेत्र से एक किशोर प्रयाग आया। श्रम-साधना एवं सद्भावना से प्रयाग विश्वविद्यालय में उच्च से उच्चतर शिक्षा प्राप्त की। अपनी मेधा के श्रेय स्वरूप उसी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष बना और सेवा-निवृत हो गया। इस लम्बे अन्तराल में उसके शिष्यों की श्रृंखलाएँ बढ़ती गयीं और परिवार की पीढियाँ भी बढ़ती गयी। महानगर में शिक्षा, सांस्कृतिक व सामाजिक क्षेत्रों में वयोवृद्ध प्राध्यापक की अकूत मान्यता होने लगी। इस मध्य हुआ यह कि उनके पौत्र की उपस्थिति कम होने के कारण परीक्षा में बैठने से रोक दिया। पौत्र व घर वालों ने जोर लगाकर देख लिया, पर उसको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं मिली। थककर-घर वालों ने प्रतिष्ठित पितामह से अनुशंसा करने को कहा, उन्होंने भी अनसुनी कर दी। घरवालों ने उनसे बोलना बंद कर दिया। अन्ततः प्राध्यापक पितामह पौत्र को लेकर विश्वविद्यालय के तत्संबंधी विभाग में जा पहुँचे। तेजस्वी विभागाध्यक्ष अपने उच्चासन से उठे और वयोवृद्ध प्राध्यापक के चरण-स्पर्श करके अपने आसन पर बैठाया। स्वागत करते हुए वे बोल पड़े प्रोफेसर सर! आज मैं जो कुछ हूँ, आपके कारण हूँ। उस समय उपस्थिति कम होने पर आप मुझे परीक्षा में बैठने से रोकते नहीं, तो मैं विशद तैयारी नहीं करता, शीर्ष स्थान न पाता और आज विभागाध्यक्ष ने उनके आने का कारण पूछा। उन्होंने कोई अनुशंसा नहीं की। इधर से निकल रहा था, सोचा मिलता चलूँ। अच्छा अब चलता हूँ। पौत्र ने घर आकर सारी बात बतायी। घर वालों को समझा कर संतुष्ट कर दिया, आगे की तैयारी के लिए स्वयं को पुष्ट कर लिया। वयोवृद्ध प्राध्यापक से सबके प्रणाम चल निकले और पौत्र का सुनिश्चय उत्कृष्ट हो गया। उसका भी भविष्य समुज्जवल हो गया।

- वरेण्यम्' अवन्तिका (प्र), रामघाट मार्ग,
अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
42. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
43. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
44. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
45. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
46. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
47. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
48. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
49. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
50. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
51. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
52. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
53. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
54. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
55. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
56. यज्ञ समिति झज्जर
57. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
58. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
59. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
60. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
61. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
62. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
63. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
64. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
65. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
66. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
67. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
68. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
69. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुड़गांव
70. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
71. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

प्रक्रिया पर निर्भर है।

विलासिता हमें अपंग करके छोड़ेगी: वर्तमान अति भौतिक विलासिता को देख कर यह अहसास हाता है कि कुछ हजार वर्ष बाद तो सभवत: एक भी बच्चा शुद्ध जन्म नहीं लेगा, उनमें से अधिकांश कोई न कोई रोग लेकर जन्मेंगे, कई तो ऐसे भी होंगे जो आज के वीर्य रोगों से रोगी मनुष्य की संतान होने के कारण नपंसुक भी होंगे। इसलिए कोई संदेह नहीं आने वाली पीढ़ी अपने अंग खो दे। इसका कारण मानवीय मस्तिष्क में धन क्षेत्र का निरन्तर विस्तार आज मनुष्य चलता तो बहुत है पर बैठे-बैठे चलता है। रेल, मोटर, वायुयान, चलाते हैं। खाता बहुत है जीभ खिलाती है सुनता बहुत है, रेल, मोटरों की गड़गड़ाहट सुननी पड़ती है। इससे मनुष्य को शान्ति देने वाले हारमोन्स का स्रोव होता जा रहा है। विचार शक्ति प्रोढ़ होती जाएगी और इन्द्रियों की क्षमता गिरती जाएगी जिससे भावी संतति भी अपंग एवं संस्कारहीन ही होती जायेगी।

परिवेश मनुष्य को भी बदल देता है:- मनुष्य पारदर्शी कांच की तरह है, उसीरंग का दिखने लगता है, जिस तरह के रंग के सम्पर्क में आता है तथा वह परिस्थिति के स्तर का बन जाता है। जहाँ ऊँचे उठाने वाली परिस्थितियों में रह कर व्यक्ति-सम्मुनत बनता है, वहां निकृष्ट परिस्थितियां उसे निरन्तर गिराती चली जाती है। इसलिए मनुष्य को प्रकृति के अनुकूल व आत्मोथान के परिवेश में रहना होगा।

वातावरण हमें स्वयं ही बनाना होगा: व्यक्ति निर्माण से लेकर समाज निर्माण तक के लिए जहां व्यक्तिगत जीवन को आदर्शवादिता के सहारे प्रखर प्रतिभावान बनाने की आवश्यकता है और ऐसा वातावरण तैयार किया जाये, जिसमें ईश्वरीय व्यवस्थानुसार वैदिक संस्कार, व्यवहार, आचार और आदर्श जीवन पद्धति अपनाई जाये।

वंशानुक्रम की सुप्रजनन का मूल आधार:- माता-पिता की शारीरिक और मानसिक संरचना के अनुरूप संतान का स्वास्थ्य और बुद्धि का विकास होता है। इस बात का ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है कि उद्गम स्रोत शुक्राणु का स्तर क्या और कैसा है। यह बच्चों के शरीर और मन के निर्माण व्यक्तित्व, भविष्य और चरित्र की संभावना पर पूरी तरह लागू होता है।

हम सुधरेंगे तो बच्चे सुधरेंगे: आज के हमारे कुसंस्कार व सुसंस्कार कल के बच्चे में वही संस्कार आते हैं। संस्कारों की शक्ति इतनी बलवान होती है कि वह आने वाली पीढ़ी के मन ही नहीं शरीरों को भी प्रभावित कर सकती है। इसलिए हमें गंभीरता से विचार करना पड़ेगा कि भावी पीढ़ी संतति, दिनों दिन संस्कारहीन उद्दंड और स्वेच्छाचारी बन रही है क्या उसका कारण हम तो नहीं हैं। प्रत्येक पति-पत्नी उच्च आदर्श संस्कार वैज्ञानिक और वैदिक सिद्धान्तों पर धार्मिक मान्यताएं नियमित जीवन दिनचर्या, सात्विक आहार, नियमित आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, नियमित यौगिक क्रियायें, अपनाकर भविष्य के लिए आदर्श संतति दे सकते हैं। अत: भावी पीढ़ी आदर्श वंश परम्परा का संस्कार माता-पिता से ही प्रारम्भ होता है।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

मुम्बई का 'लाफर्स क्लब इंटरनेशनल' दुनिया का एकमात्र ऐसा क्लब है जिसमें व्यायाम के नाम पर न तो जिम्नाजियम है न कोई साइकलिंग आदि दूसरे व्यायाम के उपकरण हैं। बस इस क्लब के सदस्य सुबह सबसे पहले अपने हाथों को सिर के ऊपर ले जाकर पहले मुस्कुराते हुए ही-ही-ही करने लगते हैं, थोड़ी ही देर बाद ही-ही-ही की आवाज ठहाके में बदल जाती है। स्पष्टत: हर सुबह दुनिया का स्वागत करने का इससे उत्तम तरीका और क्या हो सकता है।

जिन्दगी बहुत छोटी है, इसे आप चाहें तो हँसकर बितायें या रोकर। बेहतर तो यह होता कि जिन्दगी साहस के साथ हँसकर बिताई जाये। संकट की घड़ी में भी मुस्कुराते रहिए। यही जीवन का सार है। हँसने की कला को अपनाने का सबसे अच्छा उपाय प्रेक्षाध्यान पद्धति में यह बताया गया है कि जब कभी अकेले बैठे हों, हँसी की कोई घटना याद करके हँसने का प्रयास कीजिए तथा खूब जी खोल कर हँसिए। छोटे-छोटे बच्चों के साथ हँसी मजाक करना चाहिए। सभी व्यक्तियों को दिन में एक दो बार दिल खोल कर खिलखिलाकर जरूर हँसना चाहिए।

हँसना हमें मुफ्त में मिलता है। शायद इसलिए हमें उसकी कद्र का पता नहीं है। अब तो डॉक्टर भी कहते हैं कि आप सातों दिन तक बिल्कुल नहीं हँसे तो कमजोर हो जायेंगे। हँसना हमारे मनुष्य होने का सबूत है क्योंकि मनुष्य अकेला ऐसा प्राणी है जो हँस सकता है। जब भी संकट का समय होता है तो सारे पशुओं की दो ही गतिविधि होती हैं-भागना या लड़ना। सिर्फ मनुष्य है, जिसकी इन दोनों से अलग तीसरी गतिविधि हो सकती है और वह है हँसना। तो क्यों न हँसी का पूरा-पूरा उपयोग किया जाए? पब्लियस साइरस ने हँसने की जरूरत को इस तरह व्यक्त किया है कि अगर भीतर उत्साह का संचार हो जाए तो कठिन से कठिन काम भी आसान बन जाता है। इसके साथ से आप अकेले होकर भी अकेले नहीं रहते। यह सच्चा साथ है।

जितने भी महापुरुष हुए हैं, चाहे वह गाँधी हो, ओशो हो, श्री श्री रविशंकर हो, आचार्य महाप्रज्ञ हो-सभी ने हास्य को असाधारण महत्व दिया है। उनके प्रवचन चुटकुलों और लतीफों से सरोबार होते हैं। उनका यह वक्तव्य इन डॉक्टरों की खोज का समर्थन करता है कि 'हास्य में अद्‌भुत क्षमता है। स्वास्थ्य प्रदान करने और ध्यान में डुबाने की भी। हँसी तुम्हारे दिलो-दिमाग की गहराइयों में प्रवेश कर जाती है। हँसने वाले लोग आत्महत्या नहीं करते, उन्हें दिल के दौरे नहीं पड़ते, वे अनजान ही मौन के जगत को जान लेते हैं। क्योंकि हँसी के थमते ही अचानक मन भी थम जाता है, स्तब्ध रह जाता है। और जैसेजैसे हँसी गहरी जाने लगती है, उतनी ही गहन शांति भी छाने लगती है। हँसी तुम्हें निर्मल कर जाती है। रूढ़ियों व अतीत के कूड़े-कचरे को झाड़कर एक नई जीवन-दृष्टि देती है, तुम्हें ज्यादा जीवंत, ऊर्जावान तथा सृजनशील बनाती है। चिकित्सा विज्ञान तो कहता भी है कि हँसी, मनुष्य को प्रकृति से भेंट में मिली सर्वाधिक गहरी औषधि है। यदि बीमारी के दौरान हँस सको तो जल्दी स्वस्थ हो जाओगे और अगर स्वस्थ रहकर भी नहीं हँस पाए तो शीघ्र ही स्वास्थ्य खोने लगोगे और बीमारी घेर लेगी। लेकिन हँसना हो तो उसके लिए सेंस ऑफ ह्यूमर या विनोद बुद्धि का होना बहुत जरूरी है। नहीं तो हँसना दूसरों की खामियों पर हँसने तक सीमित रह जाएगा। दिल खोलकर वही हँस सकता है जो अपने आप पर हँस सकता है।

तनाव, दर्द और झगड़े आदि को खत्म करने की शक्ति हँसी से ज्यादा किसी में नहीं है। आपके दिमाग और शरीर को कंट्रोल करने का जो काम हँसी कर सकती है, वह दुनिया की कोई दवा नहीं कर सकती। विशेषज्ञों के अनुसार हँसना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि इससे आप सामाजिक बने रहते हैं और लोगों के साथ जुड़े रहने पर आपको तनाव या अवसाद जैसी समस्या नहीं सताती है। बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा ने कहा है कि हमारी खुशी का स्रोत हमारे ही भीतर है, यह स्रोत दूसरों के प्रति संवेदना से पनपता है।

हँसी मजाक से आप अपने दिल व दिमाग के बोझ को कम करते हैं। खुश रहने से आपके भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और आप इसे अपने इर्द-गिर्द भी फैलाते हैं। आप जो काम करते हैं,

स्वास्थ्य के लिए जरूरी है हँसना

- ललित गर्ग

आज का जीवन मशीन की तरह हो गया है। अधिक से अधिक पाने की होड़ में मनुष्य न तो स्वास्थ्य पर ध्यान दे पाता है और न ही फुर्सत के क्षणों में कुछ आमोद-प्रमोद के पल निकाल पाता है। तनाव भरी इस जिन्दगी में मानो खुशियों के दिन दुर्लभ हो गये हैं। कई चेहरों को देखकर ऐसा लगता है कि इनके चेहरों पर हँसी जैसे कई सालों में कुछ पलों के लिए आती होगी या फिर इन्होंने न हँसने की कसम खा रखी होगी। लोगों के चेहरे से खिलखिलाती हँसी तो जैसे गायब ही हो गई है, जबकि हँसना जीवन के लिए बहुत जरूरी है। सच ही कहा है कि हंसमुखी सदासुखी। चार्ली चैपलिन ने कहा भी है कि मेरे जीवन में कई कठिनाइयाँ आई हैं, मगर मेरे होठों को कभी भी उसकी जानकारी नहीं थी क्योंकि वह हमेशा हंसते ही रहते थे।

आज के समाज की विडम्बना है कि इसमें हँसी पर जैसे पाबंदी लगी है। दु:ख तो इस दृश्य को देखकर होता है जब समाज में ऐसे कई लोग यहाँ-वहां देखने को मिल जाते हैं जो न तो स्वयं हँसते हैं और न ही दूसरों को हँसता हुआ देख प्रसन्न होते हैं। सही मायने में देखें तो वही लोग हंसते हुए दिखाई देंगे जिनके मन में किसी प्रकार का कपट नहीं होता है और जिनकी नियत साफ होती है। देखा जाए तो हँसना मनुष्य के उन प्रमुख गुणों में से एक है जिन्हें सहज प्राप्त किया जा सकता है पर इंसान उसे आत्मसात नहीं कर पाता।

किसी ने सच ही कहा है सौ रोगों की दवा है हँसी। आधुनिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि हंसना स्वस्थ शरीर की पहचान है तथा मन की प्रसन्नता के लिए अनिवार्य भी है। इंसान चाहे किसी भी प्रकार की परेशानी से घिरा हो, यदि कुछ देर के लिए जी भर कर हँस ले तो उसका न केवल मानसिक तनाव दूर होगा बल्कि मन तथा शरीर का स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। खिलखिला कर हंसने से न केवल स्वास्थ्य ठीक रहता है बल्कि मानव की पाचन क्रिया भी सही ढंग से चलती है।

खाने के समय हँसी से बढ़कर कोई चटनी नहीं है, हंसने से भोजन शीघ्र पचता है। जो व्यक्ति भोजन करते समय तनाव, परेशानी और कुंठा में रहते हैं उनकी आधी भूख मर जाती है और पाचनक्रिया ठप्प हो जाती है। हंसते हुए भोजन करने से भोजन करने वाले की जठराग्नि प्रदीप्त होती है तथा रस, रक्त, मांस, मज्जा, चर्बी अस्थि तथा वीर्य की वृद्धि होती है।

आजकल अमेरिका के स्वास्थ्य केन्द्रों में हंसी और स्वास्थ्य संबंध का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। लास एंजेल्स के एक अस्पताल में जब मरीज को छुट्टी दी जाती है तो उसे यह निर्देश भी दिया जाता है कि वह दिन में कम से कम 15 मिनट अवश्य हंसे। केलीफोर्निया के एक वृद्ध घर में नियमित रूप से हास्य को औषधि के रूप में देने के लिए हास्य पुस्तकें, हास्य कविताएं, कार्टुन और हास्य चलचित्र दिखाए जाते हैं। आज हमारे देश में भी सुबह-सुबह योग के नाम पर पार्को में लोगों के ठहाके सुनने को मिलते हैं।

दरअसल हँसना अपने आप में ही एक व्यायाम है। हँसने की क्रिया में मुँह, गर्दन, छाती तथा पेट की माँसपेशियों को भाग लेना पड़ता है। फलस्वरूप हँसने से मानव शरीर के अंग और भी सुदृढ़ तथा क्रियाशील बनते हैं। इसी वजह से हँसमुख तथा मिलनसार व्यक्तियों के गाल गोल सुन्दर तथा चमकीले हो जाते हैं। हँसने से फेफड़े के रोग नहीं होते। शरीर में ऑक्सीजन का संचार बढ़ जाता, साथ ही प्रदूषित वायु बाहर निकल जाती है। भरपूर हँसी से आपके चेहरे के स्नायुओं, श्वास नलियों और पेट का बेहतरीन व्यायाम हो जाता है। हँसने से दिल की धड़कन और रक्तचाप क्षणिक रूप से बढ़ता है, साँस तेज और गहरी होती है और खून में प्राण वायु दौड़ने लगता है। एक ठहाकेदार हँसी आपकी उतनी ही कैलोरी जला सकती है जितना कि तेज चलना। हँसी के दौरान आपका मस्तिष्क इतने हार्मोन्स छोड़ता है कि उससे आपकी सेहत शिखर पर आ जाती है।

पुरुषार्थ और भाग्य

- कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

जिन कार्यो को करने से हमारे प्रयोजन सिद्ध होते हैं वे पुरुषार्थ कहलाते हैं। वेदादि शास्त्रों में मनुष्य के करने योग्य चार पुरुषार्थ बताए गए हैं:- धर्म अर्थ, काम और मोक्ष। धर्मपूर्वक धन प्राप्त करने हेतु परिश्रम करना आर्थिक पुरुषार्थ है। ईश्वरीय सृष्टिक्रम में हमें निरन्तर कर्म करने की शिक्षा मिलती है। हम जिस पृथ्वी पर रहते हैं वह निरन्तर अपनी कक्षा में भ्रमण करती रहती है। हम जो अन्न खाते हैं, वस्त्र पहनते हैं और जिन घरों में रहते हैं वे सब अत्यन्त परिश्रम से ही प्राप्त होते हैं। हम जो विद्या प्राप्त करते हैं और धनादि पदार्थ अर्जित करते हैं वह सब उद्यमशीलता से ही प्राप्त होता है। यजुर्वेद में कहा गया है-**'कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:'** अर्थात् मनुष्य कर्मो को करता हुआ सौ वर्ष जीने की इच्छा करे। यह प्राणियों का स्वाभाविक धर्म है कि बिना कर्म किए हम क्षण भर भी जीवित नहीं रह सकते हैं। इस कारण से हमें कर्म अवश्य करना चाहिए। महाभारत के शान्ति पर्व में कहा गया है कि प्रारब्ध केवल बीजरूप है। किसान भूमि को जोत कर खाद डालने के बाद उसे जल से सिंचित करता हैं उसके बाद ही बीज बोने पर अन्न उत्पन्न होता है। ऐसे ही कर्मो का प्रारब्ध रूप बीज मनुष्य द्वारा परिश्रम करने पर सफलता के वृक्षरूप में बढ़कर सुखरूप फल देता है। कुछ लोग परिश्रम या मेहनत से भागते हैं और सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ देते हैं। उनका सोचना होता है कि ''कि मनुष्य लाख यत्न कर ले परन्तु उसका फल मिलने वाला नहीं है क्योंकि सब कुछ भाग्य के अध ीन है। मनुष्य को जो कुछ फल प्राप्त होते हैं, से सब भाग्य पर निर्भर होते हैं। कर्म या पुरुषार्थ से फलों की प्राप्ति का कोई सम्बन्ध नहीं है।'' यह सोच उचित नहीं है क्योंकि ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था परमात्मा के सार्वभौम नियमों के अनुसार संचालित होती है और यह जीवों, सब कालों और सब स्थानों के लिए एक सी रहती है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है। साथ ही परमेश्वर का कार्य है सब जीवों को पाप-पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुंचाना। महर्षि ने आर्योद्देश्यमाला में लिखा है कि ''जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय, सर्वशक्तिमान, निराकर, सर्वत्र, व्यापक, अनादि, अनन्त आदि सत्य गुण वाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मा आदि है जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना, सब जीवों को पाप-पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुंचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।

महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन में कहा है-

सति मूले तद्विपाको जात्यायुभोर्गा:।।

इस सूत्र की व्याख्या में कहा गया है कि अविद्यादि पांच क्लेशों-अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश के रहने पर कर्माशय फल को प्राप्त कराने वाला होता है। क्लेश रूप मूल के नष्ट हो जाने पर कर्माशय फल देना प्रारम्भ नहीं करते। जैसे भूसी से ढके हुए है और जले नहीं है, वे चावल के बीज हैं, वे अंकुरित होने में समर्थ होते है। परन्तु जो बीज भूसी से रहित अथवा जले हुए चावल के बीज हैं, वे उगने में समर्थ नहीं होते। उसी प्रकार अविद्यादि क्लेशों से आबद्ध-जुड़ा हुआ कर्माशय कर्मफल को प्राप्त कराने वाला होता है, क्लेशो से रहित-हीन हुआ अथवा विवेकख्याति से जलाये गये दग्धबीज भाव वाला नहीं। वह फल जाति, आयु और भोग के रूप से तीन प्रकार का होता है।

मनुष्य के अनेक जन्म होते हैं, इसलिए अनेक कर्मो के फल प्राप्त होते है। इसलिए जन्मों को क्रम से ही कहना चाहिए कि एक कर्म से एक जन्म, दूसरे से दूसरा इत्यादि। इसमें भी दोष उपस्थित होगा अर्थात् जन्म-जन्मान्तरों के असंख्य अविशिष्ट कर्मो के फल प्राप्त करने का नियम न रहेगा और असन्तोष प्राप्त होगा। इसलिए जन्म और मृत्यु के बीच में जो पुण्य और पाप रूपी विचित्र कर्माशय प्राप्त किया जाता है, वह सब प्रधान रूप में अथवा गौण रूप में स्थित होता है। इन मुख्य-मुख्य कर्मो में से कौन कर्म फलोन्मुख होने में मुख्य हैं और कौन गौण होने से दबे हुए हैं,

उस पर अच्छे से फोक्स कर पाते हैं। हँसने से आपकी बॉडी रिलेक्स होती है। इसके अलावा आपका रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। हँसते रहने से आप ज्यादा फिट व हैल्दी रह सकते हैं। कई शोधों में यह पाया गया है कि स्पोंडेलाइटिस या कमर के दर्द जैसे असहनीय दर्द में आराम के लिए हँसना एक प्रभावी विकल्प है। डॉक्टर लॉफिंग थैरेपी की मदद से इन रोगियों को आराम पहुँचाने का प्रयास करते हैं।

कहा जाता है छोटे बच्चे शिशु की हँसी में तो भगवान का वास होता है और भगवान ही उसे होंठ पर मुस्कान देते हैं। हँसता हुआ बालक देखकर हर कोई खुश हो जाता है और माहौल में व्याप्त तनाव दूर हो जाता है। क्रोध को काफूर करने में हँसी एक अमोघ शस्त्र है। एक वाहन के पीछे लिखा हुआ था कि हँस मत पगली प्यार हो जाएगा। इस जुमले पर गौर करें तो सत्य है कि हँसना एक ऐसी कला है जो दो हृदयों (दिलों को) बिना किसी तार के जोड़ देती है। हँसी की प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए जगह-जगह युद्ध स्तर पर उपक्रम होने चाहिए। इस काम को टी. वी. पर लॉफ्टर शो के माध्यम से प्रभावी ढंग से किया जा रहा है जिससे गुमशुम जनता में ऊर्जा का संचार हो रहा है। ये शो रक्त संचार को बढ़ा रहे हैं।

हँसिए..... खुलकर..... और खुलकर। हँसिए जब भी मौका मिले तब हंसिए। हंसने के मौके भी तलाशिए। हँसी आपको स्वस्थ रखेगी। जिन्दगी के दिन भी बढ़ाएगी। हँसने से रक्तचाप ठीक रहने के साथ तनाव से छुटकारा मिलता है। तब हँसने में कोताही क्यूँ करें। बेन्जामिन फ्रेंकलिन ने कहा भी है कि हँसमुख चेहरा रोगी के लिए उतना ही लाभकर है जितना कि स्वस्थ त्रतु।

कमर दर्द में करें ताड़ासन

यदि कमर दर्द हो तो उसमें योग के अभ्यास बड़े कारगर होते हैं। इसमें सबसे पहला अभ्यास है ताड़ासन। ताड़ एक वृक्ष का नाम है। जब हम अपने शरीर की आकृति ताड़ के समान सीधी लम्बी व खिंची हुए बनाते हैं, तब उस अवस्था को ताड़ासन कहते हैं।

विधि: जमीन पर सीधे खड़े होकर एडी व पंजों को आपस में मिला लें व हाथों को छाती के सामने लाकर उंगुलियों को आपस में फंसा लें। हथेलियों को पलटें व हाथों को सीधाकर सांस भरते हुए हाथों को आकाश की और उठा लें। यहां कोहनियां सीधी रखें। अब शरीर का संतुलन पैरों के पंजों पर लाते हुए एड़ियों को ऊपर की ओर उठा दें और पूरे शरीर को अधिक से अधिक ऊपर की ओर खींच कर रखें। यहां सांस की गति सामान्य रहेगी। चेहरे पर प्रसन्नता रखते हुए यथाशक्ति रूके फिर सांस निकालते हुए वापस आ जाएं। इसका अभ्यास दो बार कर लें।

सावधानियां: यदि कमर दर्द के कारण एड़िया उठाने में असुविध लगे या पंजों पर संतुलन न बना पाएं तो बिना एड़िया उठाए ही शरीर को ऊपर की ओर खींचे।

लाभ: ताड़ासन से रीढ़ की हड्डी पर ऊपर की ओर खिंचाव पड़ने से कमर की मांसपेशियों व कशेरूकार्यो के स्वास्थ्य में वृद्धि होने लगती है व कमर में आई जकड़न दूर होती है। यह आसन कमर पर एक प्राकृतिक खिंचाव डालकर उसकी तान को सुधारने में मदद करता है जिससे कमर दर्द, स्लिप डिस्क व साईटिका दर्द में आराम पहुंचता है। आफिस में या कहीं भी लगातार बैठने पर यदि कमर में दर्द लगे तो इस आसन को उसी समय किया जा सकता हैं, इसके करते ही कमर में आराम मिलेगा। नर्वस सिस्टम को बल देने वाला यह आसन गर्दन दर्द, कंधे की जकड़न, गठिया व जोड़ों के दर्दो में भी आराम पहुंचाता है।

यह गुरुत्वाकर्षण के विपरीत शरीर की मांसपेशियों में खिंचाव लाकर उनमें लचीलापन बढ़ाता है। कमर दर्द के अलावा अस्थमा, सांस फुलना आदि कफ रोगों को दूर करने में सहायक हैं। इससे वक्षस्थल व हृदय की मांसपेशियों में लचीलापन आता है। शरीर का आलस्य, थकान, भारीपन व जकड़न दूर का यह तरोताजगी व हल्कापन देने वाला है इससे पूरे शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। बच्चों की लम्बाई बढ़ने में भी यह आसन बड़ा लाभकारी है।

से हो रहा है। परमेश्वर हमारे भाग्य का विधाता है, इसलिए वही हमारा भाग्य लिख रहा है और उसकी इच्छा के विरूद्ध कोई भी कुछ नहीं कर सकता है। कोई अपने भाग्य को नहीं बदल सकता है। इस प्रकार अवैदिक और आधारहीन धारणाएं बनाकर फैलाई जाती हैं। हम यदि वेदादि शास्त्रों और दर्शनों का सूक्ष्म अध्ययन और मनन करें तो पाते हैं कि जो कुछ हैं वह कर्माशयों के आधार पर प्राप्त प्रारब्ध हैं। हम कर्म और पुरुषार्थ करके ही अपना प्रारब्ध बना सकते हैं। इसलिए जीवन में पुरुषार्थ महत्त्वपूर्ण है और इसके द्वारा ही जीवन की उच्चता प्राप्त की जा सकती है। महाभारत में कहा गया है कि यह निश्चित समझें कि जो मनुष्य आलसी होगा वह कभी धनाढ्य नहीं हो सकेगा, न उसको उत्तम मित्र मिलेंगे, न ही उसे उत्तम पदार्थ मिलेंगे। यदि मिल भी गए तो शीघ्र नष्ट हो जायेंगे। आलस्य की अपेक्षा निष्फल हुआ पुरुषार्थ भी उत्तम है, पुरुषार्थी को यह संतोष रहता है कि उसने अपना कर्तव्य पूर्ण किया है। मनुष्य की दुःख से निवृत्ति और सुख को प्राप्त करने के साधन हेतु आलस्य को त्याग कर पुरुषार्थ करना चाहिए।

ईश भजन

ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।।
जबसे दुनिया बनी है तब से रोज बदलती है,
जो शै आज यहां है कल वो आगे बढ़ती है।
देख के अदला-बदली तू क्यों आहें भरता है,
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।।
दुःख सुख आते जाते रहते सबके जीवन में,
पतझड़ और बहारें दोनों जैसे गुलशन में।
चढ़ता है तूफान कभी और कभी उतरता है,
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।।
कितनी लम्बी रात हो फिर भी दिन तो आयेगा,
जल में कमल खिलेगा फिर से वह मुस्कराएगा।
देता है जो कष्ट वही कष्टों को हरता है,
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।।
वही दाना फलता है जो मिट्टी में मिल जाये,
सहे 'पथिक' जो कांटे वो ही मंजिल अपनी पाए।
भट्टी में पड़कर सोने का रंग निखरता है,
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।।
ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।।

– साभार वैदिक काव्यांजलि

हंसो और हंसाओं

– रवि शास्त्री

1. **संता** पैराशुट बेच रहा था-हवाई जहाज से कूदो बटन दबाओ और जमीन पर सुरक्षित पहुंचो।
   ग्राहक-अगर पैराशूट नहीं खुला तो......
   संता-तो पैसे वापिस।
2. **पति** अपनी **पत्नी** का हाथ लिये बाजार में घुम रहा था तभी उसका एक दोस्त उसे मिला और बोला-यार इतने साल हो गये तेरी शादी हुए लेकिन आज भी अपनी पत्नी के प्रति तेरा प्रेम देखकर दिल खुश हो गया।
   पति-ऐसा कुंछ नहीं है यार, इसका हाथ छोड़ते ही, ये किसी दुकान में चली जाती है।
3. **पत्नी**-डार्लिंग सुनते हो.... मेरी उर्म 48 साल होते हुए भी आपका एक दोस्त हुस्न की तारीफ करता है।
   पति-उसमान भाई होगा
   पत्नी- आपने कैसे पहचाना।
   पति- वो कबाड़ का व्यापारी है।
4. **पति**-सेल्फ कण्ट्रोल तो कोई तुमसे सीखे। मानना पड़ेगा।
   पत्नी-(गर्व व खुशी के साथ)-वो तो है पर किस बात पर।
   पति-शरीर में इतनी 'शुगर' पर मजाल है कभी जुबान पर आने दी हो।
5. **पप्पु**-हंमने 'क्रिश गेल़' के चेहरे को डब साबुन से धोया।
   चप्पु- फिर क्या हुआ-गोरा हुआ।
   पप्पु-नहीं यार फिर डब साबुन को दो बार टाइड से धोया।

इसकी अभिव्यक्ति मृत्यु के प्रकार से होती है और वह समस्त प्रधान-गौणभाव से स्थित कर्माशय एक समुदाय के रूप में फलोन्मुख होने के लिए जीव को मृत्यु के पश्चात् क्रियाशील होकर एक ही जन्म को प्रदान करता है और वह जन्म उसी कर्म से भोग प्रदान होता है। वह कर्माशय जन्म, आयु और भोग का कारण होने से त्रिविपाक=तीन प्रकार के फलों वाला होता है। इसलिए कर्माशय एकभाविक=एक जन्म वाला कहा गया है। वर्तमान जन्म में फल देने वाला कर्माशय एक फल को देने वाला होता है अथवा दो फलों-आयु और भोग को देने वाला होता है। इसमें नन्दीश्वर और नहुष के उदाहरण दिए जाते हैं। नन्दीश्वर ने वर्तमान जन्म के पुण्य कर्मों से आयु ओर भोग को प्राप्त किया था और नहुष ने वर्तमान जन्म के दुष्ट कर्मों से दुःख रूप भोग को प्राप्त किया था। अविद्यादि क्लेश, शुभाशुभ कर्म और फलों के अनुभव से उत्पन्न वासनाओं के द्वारा अनादिकाल से सम्बद्ध यह चित्त सब ओर से सर्वथा वैसे चित्रित अर्थात् विविध प्रकार के वर्ण वाला सा बना रहता है, जैसे मछली पकड़ने का जाल ग्रन्थिबन्धनों से फैला होता है। इस चित्त को चित्रित करने वाली वासनाएं अनेक जन्मों की हैं, किन्तु जो यह कर्माशय है, वह एकजन्म वाला कहा गया है। और स्मृति के हेतु जो संस्कार हैं, वे वासनाएँ हैं और वे प्रवाह से अनादिकालीन हैं। जो वह एक जन्म में फल देने वाला कर्माशय है, वह निश्चित फल वाला और अनिश्चित फल वाला होता है। उन दोनों कर्माशयों में से यह एक जन्म में फल देने वाला कर्माशय है। अनियतविपाक वाले अदृष्टजन्म में फल देने वाला जो कर्माशय है, उसकी तीन प्रकार की गति होती हैं-किए गए और अपक्व का नाश अर्थात् बहुत लम्बे समय तक बिना फल दिए कर्मों का पड़ा रहना या बहुत काल के बाद फल देना, जैसे मुक्ति की अवधि के इन कर्मों के आधार पर जन्म का मिलना, क्योंकि कर्माशय बिना फल दिए नष्ट नहीं होता है।

किसी प्रधान कर्म के फल में ही बीज भाव को प्राप्त होना अर्थात् फलोन्मुखी मुख्यकर्म के साथ-साथ बीज भाव से अंकुरित होना और मुख्य कर्म के फल से ही फल प्राप्त हो जाना।

नियतफल वाले प्रधान कर्म के फलोन्मुख होने से दबे हुए कर्माशय का चिरकाल तक स्थिर रहना अर्थात् बिना फल दिए शान्त रह कर पड़े रहना।

कर्माशय के फल देने के सम्बन्ध में देश, काल और निमित्त के अनिश्चय से यह कर्मफल की पद्धति विचित्र और बहुत कठिनाई से समझने योग्य है और अपवाद होने से सामान्यनियम की निवृत्ति नहीं होती है। अतः एकजन्म देने वाला ही कर्माशय होता है, यह नियम माना गया है। क्या कर्माशय वर्त्तमान जन्म में भी फल दे सकता है या केवल भावी जन्मों में ही फल प्रदान करता है, इसके उत्तर में महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र में कहा है-

क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः।

(यो. 2.12)

इस सूत्र का अर्थ यह है कि कर्मवासनाएं दो प्रकार की होती हैं-पुण्य कर्माशय और अपुण्यकर्माशय। यह दोनों प्रकार का कर्माशय काम, लोभ, मोह, क्रोध से उत्पन्न होता है अर्थात् समस्त पुण्यापुण्य कर्मभावना, लोभभावना, मोहभावना और क्रोधभावना से किए जाते हैं। ये दोनों प्रकार के कर्माशय दृष्टजन्म अर्थात् भावी जन्म में फल देने वाला होते हैं। उन दृष्टजन्म वेदनीय और अदृष्ट जन्मवेदनीय कर्मों में नारक अर्थात् अत्यन्त नीच गति को देने वाले दृष्ट कर्मों को करने वाले मनुष्यों का कर्माशय वर्तमान जन्म में फल देने वाला नहीं होता है, क्योंकि उनका फल तो अत्यत अन्धकारमयी, स्थावर, पशु, पक्षी आदि योनियों में ही मिल सकता है और क्षीणक्लेशों वाले तत्त्ववेता योगियों, जीवान्मुक्त जीवों का कर्माशय भी अगले जन्मों में फल देने वाला नहीं होता है, क्योंकि वे पुनर्जन्म में जाने योग्य नहीं रहे, शरीर त्याग करने के पश्चात् ही उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी।

हम देखते हैं कि विषय की गम्भीरता के कारण यह अज्ञान फैला हुआ है कि कर्म, कर्म का स्वरूप और कर्मफल की मीमांसा अतिसूक्ष्म विषय है और स्वाध्याय की अत्यधिक अपेक्षा रखता है। लोग कर्म और कर्मफल सिद्धान्त को ठीक-ठीक नहीं समझ पाते हैं और यह समझने लगते हैं जन्म, मरण, हानि, लाभ और जो कुछ हो रहा है, वह परमेश्वर की ओर

अब एक प्रश्न उठता है कि पितृयज्ञ मरे हुए माता पिता का होता है या जीते हुओं का। इसमें लोगों का मतभेद है। हम कुँआर महीनों में लोगों को अपने मरे हुए पितरों का श्राद्ध तर्पण करते हुए देखते हैं, कुँआर के कृष्णपक्ष को लोग **'पितृपक्ष'** कहते हैं क्योंकि इसमें मरे हुए पुरखों का श्राद्ध तर्पण किया जाता है।

हम अभी कह चुके हैं कि **'पितृ'** शब्द में कोई ऐसी बात नहीं जो मरे हुए माँ बाप की ओर संकेत करे।

अब हम यहाँ यह देखना चाहते हैं कि क्या मरा हुआ भी किसी का बाप या माँ हो सकता है।

मनुष्य नाम है विशेष शरीरधारी जीव का। न तो केवल शरीर को ही मनुष्य कहते हैं। न केवल जीव को। जब शरीर में से जीव निकल जाता है तो उसे मनुष्य नहीं कहते किन्तु 'मनुष्य की लाश' कहते हैं। वह जीव भी मनुष्य नहीं है क्योंकि वह जीव मनुष्य के अतिरिक्त अन्य शरीर भी धारण कर सकता है। जो आज आदमी के शरीर में है वह कल मर कर चींटी के शरीर को धारण कर सकता है और परसों कुत्ता बिल्ली इत्यादि का। सम्भव है कि फिर किसी जन्म में वह मनुष्य का शरीर धारण करे।

इसी प्रकार न तो शरीर को ही माँ या बाप कहते हैं न जीव को। जब तक हमारे माता, पिता, दादी, दादा जीवित हैं तब तक वह हमारे माता, पिता, दादी या दादा हैं। जब मर गए तो उनकी लाश रह जायेगी जिसको जला देंगे। न्यायदर्शन में कहा है कि– **''शरीरदाहे पातकाभावात्।''** (न्यायदर्शन, अध्याय ३)

अर्थात् लाश के जलाने से पाप नहीं होता। जब हमारे माता पिता आदि मर जाते हैं और हम उनकी लाश को जला आते हैं तो कोई हमसे यह नहीं कहता कि तुमने पितृ-हत्या की, तुम पापी हो। क्योंकि जिस चीज़ को हमने जलाया वह माँ बाप न थे किन्तु माँ बाप की लाशें थीं।

अब प्रश्न होता है कि मरने के बाद हमारे माँ बाप कहाँ हैं? क्या वह जीव माँ बाप हैं? कदापि नहीं। उन जीवों की पितृ संज्ञा नहीं। क्योंकि मरने के पश्चात् न जाने उन्होंने कहाँ जन्म लिया। वही जीव सम्भव है कि हमारे ही घरों में नाती पोतों या पुत्र के रूप में जन्म लें। या अपने कर्मानुसार ऊँच या नीच योनियों को प्राप्त हों या यदि परम योगी हों तो उनकी मुक्ति भी हो जाए। यदि हमारे माता या पिता हमारे पुत्र या पुत्री के रूप में जन्म लेंगे तो हम उनके **'पितृ'** होंगे न कि वह हमारें। वस्तुत: माता पिता आदि सम्बन्ध उसी समय तक हैं जब तक कि शरीर और जीव संयुक्त हैं? मृत्यु होते ही यह सम्बन्ध छूट जाते हैं।

जब माता पिता मर जाते हैं तो हम कहते हैं कि हमारे माता पिता मर गए। परन्तु वह मरते नहीं। जीव तो सदा अमर है। इसीलिए मरे हुए माता पिता की **पितृ** संज्ञा केवल भूतकाल की अपेक्षा से होती है वर्तमान काल की अपेक्षा से नहीं। क्योंकि वह सम्बन्ध केवल भूतकाल में था अब नहीं।

इसीलिये यह कहते हैं कि हमारे पिता धनाढ्य थे, या निर्धन थे, विद्वान् थे या अविद्वान् थे। परन्तु यह कोई नहीं कहता कि आज हमारे मातापिता कुत्ता या घोड़ा हैं या हाथी हैं। क्योंकि हमारा पितृत्व का सम्बन्ध उसी दिन समाप्त हो गया जिस दिन वे मर गए। इसीलिए पितृयज्ञ केवल ज़ीवित माता पिता का हो सकता है न कि मरे हुओं का। इसी को चाहे श्राद्ध कह लीजिए चाहे तर्पण। साधारणतया श्राद्ध का मरे हुओं के साथ जो सम्बन्ध है वह ग़लत है और वह एक प्रकार की कुप्रथा है। कुँआर को पितृपक्ष कहना ग़लत है। अगर हमारे माँ बाप या दादी दादा जीवित हैं तो हमारे लिए सौभाग्यवश समस्त वर्ष ही पितृपक्ष है क्योंकि हमको नित्य उनकी सेवा, सत्कार करना चाहिए। परन्तु यदि वह मर गए हैं तो कुँआर में ही कहाँ से आयेंगे। इस लिए श्राद्ध तर्पण जीते हुओं का होना चाहिए

(क्रमश:)

पितृ-यज्ञ

- ले.स्व. पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

'पितृ-यज्ञ' दो शब्दों से मिलकर बना है। एक **''पितृ''** और दूसरा **''यज्ञ''**।

'पितृ' का अर्थ है बाप। माँ और बाप दोनों को भी **'पितृ'** कहते हैं। जैसे **''माता च पिता च पितरौ'** । **'माता'** और **'पिता'** दोनों शब्दों का जब द्वन्द्व समास बनाते हैं तो **'पितरौ'** बनता है। अर्थात् **'पितृ'** अर्थ है माँ और बाप दोनों।

'पितृ' का प्रथमा विभक्ति में **'पिता'** हो जाता है। कुछ संस्कृत न पढ़े हुए लोग समझते हैं कि **'पिता'** जीते हुए बाप को कहते हैं और **'पितर'** मरे हुए बाप को। परन्तु यह बात नहीं है। असली शब्द **'पितृ'** है। जब उसका कर्त्ता-कारक बनाते हैं तो **'पिता'** हो जाता है। जब कर्म-कारक बनाते हैं तो **'पितरम्'** हो जाता है। कर्त्ता-कारक बहुवचन में **'पितरः'** होता है। जैसे **'मम पिता गच्छति'** का अर्थ है **'मेरा बाप जाता है'**। **'पितरमपश्यम्'** का अर्थ है **'मैंने बाप को देखा'**। **'तेषां पितर आयान्ति'** का अर्थ है **'उनके बाप आते हैं'**।

इस प्रकार **'पितृ'** या **'पितर'**। शब्दों में मौत का कुछ संकेत नहीं है। और यह कहना गलत है कि **'पितृ'** या **'पितर'** मरे हुए बाप के लिए आता है जीते हुए के लिए नहीं। दादे, परदादे या दादी और परदादी के लिए भी **'पितृ'** शब्द आता है।

'यज्ञ' शब्द का अर्थ है पूजा, सत्कार। कुछ लोग समझते हैं कि **'यज्ञ'** शब्द और **'हवन'** शब्द का एक अर्थ है। यह भी गलत है। हवन को भी यज्ञ कहते हैं परन्तु यज्ञ अन्य अर्थों में आता है। **'यज'** धातु जिससे **'यज्ञ'** शब्द बना है, देवपूजा, संगतिकरण और दान इन तीन अर्थों में आती है। इसलिये **'यज्ञ'** का अर्थ केवल हवन नहीं है। उदाहरण के लिए **'ब्रह्मयज्ञ'** का अर्थ है स्वाध्याय या ईश्वर का ध्यान। अतिथि यज्ञ का अर्थ है **'मेहमान की खातिरदारी करना'**। यहाँ न तो होम या हवन से कुछ सम्बन्ध है, न आहुति देने से, न किसी पशु आदि के काटने से। देखिए मनुस्मृति अध्याय ३, श्लोक ७०–

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञश्च तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।

अर्थात् पढ़ने पढ़ाने का नाम **ब्रह्मयज्ञ** है। तर्पण को **पितृयज्ञ** कहते हैं। होम **देवयज्ञ** कहलाता है। पशुओं को भोजन देने का नाम **भूतयज्ञ** है और अतिथि के सत्कार को **नृयज्ञ** कहते हैं। हमने यहाँ यह श्लोक इसलिये दिया है कि केवल **'देवयज्ञ'** में **'यज्ञ'** शब्द का अर्थ **'होम'** है। अन्यत्र यज्ञ का अर्थ पूजा और सत्कार ही है।

आश्वलायन गृह्यसूत्र में भी ऐसा ही है।

अर्थात् **पञ्चयज्ञो देवयज्ञो भूतयज्ञः पितृयज्ञो ब्रह्मयज्ञो मनुष्ययज्ञ इति तद् यदग्नौ जुहोति स देवयज्ञो यद् बलिं करोति स भूतयज्ञो यत् पितृभ्यो ददाति स पितृयज्ञो यत् स्वाध्यायमधीते स ब्रह्मयज्ञो यन् मनुष्येभ्यो ददाति स मनुष्ययज्ञ इति तानेतान् यज्ञानहरहः कुर्वीत।**

(आश्वलायन गृह्यसूत्र, तृतीय अध्याय)

हम ऊपर कह आये हैं कि पितृ का अर्थ है माता, पिता या अन्य पुरखे। और यज्ञ का अर्थ है सत्कार। इसलिए **'पितृयज्ञ'** का अर्थ हुआ माता पिता आदि पुरखों की सेवा सुश्रूषा!

इसमें वेद का भी प्रमाण है–

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु सम्मनाः।

अर्थात् लड़के को चाहिए कि पिता के व्रतों का अनुसरण करने वाला और माता को प्रसन्न करने वाला हो। अर्थात् सन्तान को माता पिता आदि गुरुजनों की सेवा करनी चाहिए।

है। जब बहुत से लोग दर्शन को जाते हैं तब इतना बड़ा मन्दिर है कि जिसमें दिन में भी अंधेरा रहता है और दीपक जलाना पड़ता हैं। उन मूर्तियों के आगे पर्दे खैंचकर लगाने के पर्दे दोनों ओर रहते हैं। पण्डे-पुजारी भीतर खड़े रहते हैं। जब एक ओर वाले न पर्दे को खींचा, झट मूर्त्ति आड़ में आ जाती है। तब सब पण्डे पुजारी पुकारते हैं 'तुम भेंट धरो, तुम्हारे पाप छूट जायेंगे, तब दर्शन होगा। शीघ्र करो।'' वे विचारे भोले मनुष्य धूर्त्तो के हाथ लूटे जाते हैं और झट पर्दा दूसरा खैंच लेते हैं तभी दर्शन होता है। तब जय शब्द बोल के प्रसन्न होकर धक्के खाके तिरस्कृत हो चले आते हैं।

''इन्द्रदमन'' वही है कि जिसके कुल के अब तक कलकते में हैं। वह धनाढ्य राजा और देवी का उपासक था। उसने लाखों रूपये लगाकर मन्दिर बनवाया था। इसलिए क आयावर्त्त देश के भोजन का बखेड़ा इस रीति से छुड़ावें। परन्तु वे मूर्ख कब छोड़ते हैं?

''देव' मानो तो उन्हीं कारीगरों को मानो कि जिन शिल्पियों ने मन्दिर बनाया। राजा पण्डा और बढ़ई उस समय नहीं मरते परन्तु वे तीनों वहा प्रधान रहते हैं। छोटो को दु:ख देते होंगे उन्होंने सम्मति करके उसी समय अर्थात् कलेवर बदलने के समय वे तीनों उपस्थित रहते हैं, मूर्ति का हृदय पोला रखा है उसमें सोने के सम्पुट में एक सालगराम रखते हैं कि जिसको प्रतिदिन धोके चरणामृत बनाते हैं, उसपर रात्रि की शयन आर्त्ती में उन लोगों ने विष का तेजाब लपेट दिया होगा। उसको धोके उन्हीं तीनों को पिलाया होगा कि जिससे वे कभी मर गये होंगे। मरे तो इस प्रकार और भोजन भट्टों ने प्रसिद्ध किया होगा कि जगन्नाथजी अपने शरीर बदलने के समय तीनों भक्तों को भी साथ ले गये। ऐसी झूठी बातें पराये धन ठगने के लिए बहुत सी हुआ करती हैं।

आश्रम समाचार

त्रिदिवसीय सरल आध्यात्मिक शिविर सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भांति 2017 का द्वितीय आयोजन 30 जून 2017 शुक्रवार से 1 जूलाई 2017 रविवार तक स्वामी धर्ममुनि जी आश्रम अधिष्ठाता के सानिध्य में यज्ञ और साधना शिविर उत्साह व हर्ष के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दोनों समय यज्ञ की व्यवस्था उत्तम रही। श्री पदम्चन्द जी आर्य गुड़गांव, श्री सुरेन्द्र जी एवं श्रीमती विमल बुद्धिराजा कीर्ति नगर दिल्ली, श्री मनुदेव जी शास्त्री, श्रीमती रश्मी अध्यापिका सैक्टर 2, बहादुरगढ़, मा.धूप सिंह जी आर्य बादली, श्री मनुदेव जी वानप्रस्थ वैदिक वृद्धाश्रम आदि द्वारा यजमान आसनों को सुशोभित किया गया। श्री रामदेवार्य, श्री पुरुषार्थ मुनि जी वानप्रस्थ, मनुदेव जी एवम् श्रीमती शान्ति देवी जी आर्या के भजनों का कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

श्री चांद सिंह जी योगाचार्य द्वारा प्रात: आसनों एवम् प्राणायाम का अभ्यास करवाया गया। शिवराध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक दर्शनाचार्य योग विशारद दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ गुजरात द्वारा प्रात: यज्ञोपरान्त 8 से 9, मध्याह में 11 से 12, सांय यज्ञोपरान्त 6 से 7, रात्रि 8-30 से 9.30 तक, शंका समाधान किया गया। चार कार्यक्रम चलाए गए। क्रियात्मक योग, योगदर्शन स्वाध्याय विषय अत्यन्त सरल भाषा में समझाने का सफल प्रयास रहा। श्रोताओं द्वारा स्वामी जी की व्याख्यान शेली की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की गई।

समापन समारोह: 1 जुलाई प्रात: 8 बजे से 9 बजे तक यज्ञपूर्णाहुति पश्चात् श्रीमती शान्ति देवी जी आर्या, सुखपालार्य, पं. जयभगवान जी आर्य, पं. रमेश चन्द्र जी आर्य भजनोपदेशक झज्जर द्वारा सुन्दर भजन सुनाए गए, स्वामी सोम्यानन्द जी सरस्वती, श्री शिवस्वामी जी और श्री रवि शास्त्री के व्याख्यान हुए। अन्त में 11 से 12 बजे तक स्वामी विवेकानन्द जी का अत्यन्त प्रभावशाली प्रवचन हुआ। स्व. धर्ममुनि जी द्वारा आगामी कार्यक्रमों का निमन्त्रण दिया गया और सभी का धन्यवाद किया गया। शिविर के संयोजक स्वामी रामानन्द जी द्वारा सफल आयोजन किया गया। स्वादिष्ट भोजन के साथ शिविर का समापन हुआ।

जगन्नाथ जी में प्रत्यक्ष मिथ्या चमत्कार

- श्रीमती सुशीला आर्या, रांची झारखण्ड

महर्षि द्वारा यह उत्तर देने पर कि अन्धे लोग भेड़ के तुल्य एक के पीछे दूसरे चलते हैं, कूप खाड़े में गिरते हैं, हट नहीं सकते। वैसे ही एक मूर्ख के पीछे दूसरे चलकर मूर्त्ति पूजा रूप गढ़े में फंसकर दुःख पाते हैं।

प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करते हैं कि-भला यह तो जाने दो, परन्तु जगन्नाथजी में प्रत्यक्ष चमत्कार है। एक कलेवर बदलने के समय चन्दन का लकड़ा समुद्र में से स्वयमेव आता है। चूल्हे पर ऊपर-ऊपर सात हण्डे धरने से ऊपर ऊपर के पहिले-पहिले पकते हैं और जो कोई वहां जगन्नाथ की परसादी न खावे तो कुष्ठी हो जाता है और रथ आपसे आप चलता, पापी का दर्शन नहीं होता है। 'इन्द्रदमन' के राज्य में देवताओं ने मन्दिर बनाया है। कलेवर बदलने के समय एक राजा, एक पण्डा, एक बढ़ई मर जाने आदि चमत्कारों को तुम झूठ न कर सकोगे।

उपर्युक्त प्रश्न का विस्तार से उत्तर देते हुए महर्षि लिखते हैं-

जिसने बारह वर्ष पर्यन्त जगन्नाथ की पूजा की थी, वह विरक्त होकर मथुरा में आया था, मुझसे मिला था। मैंने इन बातों का उत्तर पूछा था, उसने ये सब बातें झूठ बतलाई। किन्तु विचार से निश्चय यह है (कि) जब कलेवर बदलने का समय आता है तब नौका में चन्दन की लकड़ी ले समुद्र में डालते हैं। वह समुद्र की लहरियों से किनारे लग जाती है। उसको ले सुतार लोग मूर्त्तियां बनाते हैं जब रसोई बनती है तब कपाट बन्द करके रसोइयों के बिना अन्य किसी को न जाने न देखने देते हैं। भूमि पर चारों ओर छः और बीच में एक चक्राकार चूल्हे बनाते हैं। उन हण्डों के नीचे ही, मट्टी और राख लगा छः चूल्हों पर चावल पका, उनके तले मांजकर, उस बीच के हण्डे में उसी समय चावल डाल (उसके ऊपर वे छः हण्डे रख) छः चूल्हों के मुख, लोहे के तवों से बंधकर, दर्शन करनेवालों को जो कि धनाढ्य हो, बुलाके दिखलाते हैं। ऊपर-ऊपर के हण्डों से चावल निकाल, पके हुए चावलों को दिखला, नीचे के कच्चे चावल निकाल दिखाके उनसे कहते हैं कि ''कुछ हण्डे के लिए रख दो।'' आंख के अन्धें गांठ के पूरे रूपये अशर्फी धरते और कोई मासिक भी बांध देते हैं।

शूद्र नीच लोग मन्दिर में नैवेध लाते हैं। जब नैवेध हो चुकता है तब वे शूद्र नीच लोग झूठा कर देते हैं। पश्चात् जो कोई रूपया देकर हण्डा लेवे उसके घर पहुंचाते और दीन गृहस्थ और साधु-सन्तों को लेके शूद्र ओर अत्यंज पर्यन्त एक पंक्ति में बैठ झूठा एक दूसरे का भोजन करते हैं। जब वह पंक्ति उठती है तब उन्हीं पत्तलों पर दूसरों को बैठाते जाते है। महा अनाचार है और बहुतेरे मनुष्य वहां जाकर, उनका झूठा न खाके अपने हाथ बना खाकर चले आते हैं, कुछ भी कुष्ठादि रोग नहीं होते और उस जगन्नाथपुरी में भी बहुत से पर सादी नहीं खाते। उनको भी कुष्ठादि रोग नहीं होते और उस जगन्नाथपुरी में भी बहुत से कुष्ठी हैं, नित्यप्रति झूठा खाने से भी रोग नहीं छूटता।

और यह जगन्नाथ में वाममार्गियों ने भैरवी चक्र बनाया है क्योंकि 'सुभद्रा' श्रीकृष्ण और बल देव की बहिन लगती है। उसी को दोनों भाईयों के बीच में स्त्री और माता के स्थान बैठाई है। जो भैरवी चक्र न होता तो यह बात कभी न होती।

और रथ के पहिये के साथ कला बनाई है जब उनको सूधी घुमाते है घूमती है तब रथ चलता है। जब मेले के बीच में पहुंचता है तभी उसकी कील को उल्टी घूमा देने से रथ खड़ा रह जाता है। पुजारी लोग पुकारते है ''दान दे और, पुण्य करो, जिससे जगन्नाथ प्रसन्न होकर अपना रथ चलावें, अपना धर्म रहे।'' जब तक भेंट आती जाती है तब तक ऐसे ही पुकारते जाते हैं। आ चुकती है जब तब एक व्रजवासी अच्छे कपड़े-दुशाला ओढ़कर आगे खड़ा रह के हाथ जोड़ स्तुति करता है कि ''हे जगन्नाथ स्वामिन! आप कृपा करके रथ को चलाइये, हमारा धर्म रक्खो।'' इत्यादि बोलके साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणामकर रथ पर चढ़ता है। उसी समय कील को सूधा घूमा देते हैं और जय-जय शब्द बोल सहस्त्रों मनुष्य रस्सी खींचते है रथ चलता

से जितना भी आर्य समाज का साहित्य उन्हें मिला, वह सारा का सारा पढ़ डाला। उन्होंने आर्य समाज के मंच से भाषण देना भी प्रारम्भ कर दिया था।

सरदार अर्जुन सिंह के व्यक्तित्व में अद्‌भुत अन्तर्द्वन्द्व का समावेश हो गया था। वे परम्परा से बिल्कुल कटना नहीं चाहते थे, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर परम्पराओं की धज्जियाँ उड़ाने में भी पीछे नहीं हटते थे। जो बात उनकी तर्क की तुला पर खरी नहीं उतरती थी, उस को त्यागने एवं नई राह खोजने और फिर उस पर चलने का साहस उनमें था। वह आर्य समाज के उस नियम सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत' रहते थे। यही बुनियादी तत्त्व इनको क्रान्तिकारी बना रहा था।

अर्जुन सिंह जी केवल विचारों से ही परिवर्तनवादी नहीं थे ऐसी बात नहीं थी। जीवन में मुख्य निर्णय लेने में उन्होंने कभी विलम्ब नहीं किया। एक बार सरकार ने वन क्षेत्र को बसाने का निर्णय लिया कि जो लोग वहां बसना चाहेंगे, उन्हें सरकार 25 एकड़ भूमि प्रति परिवार देगी। इस निमन्त्रण से आकृष्ट होकर वे बंगा गांव में आ बसे जहां भगत सिंह का जन्म हुआ।

सरदार अर्जुन सिंह के दो भाई और थे-सरदार बहादुर सिंह और सरदार दिलबाग सिंह। दोनों ने ब्रिटिश सरकार की खूब चापलूसी की और बहुत अधिक धन कमाया। वे दोनों अर्जुन सिंह को मूर्ख समझते थे और कहा करते थे कि अर्जुन सिंह ने यदि दूरदर्शिता से काम नहीं लिया तो उन्हें एक दिन भीख माँगनी पड़ेगी, परन्तु सरदार अर्जुन सिंह पर ऋषि दयानन्द की छाप पड़ चुकी थी। वे ब्रिटिश सरकार की चापलूसी की बात तो सपने में भी नहीं सोच सकते थे। उन्होंने आत्म सम्मान, निर्भीकता, स्पष्टवादिता और देश भक्ति के जिस मार्ग को चुना, आजीवन उसी मार्ग के पथिक बने रहे।

सरदार अर्जुन सिंह के यहाँ तीन पुत्र सरदार किशन सिंह, सरदार अजीत सिंह और सरदार स्वर्ण सिंह उत्पन्न हुए। तीनों पिता की तरह वीर, निर्भीक, देश भक्त और स्पष्टवादी थे। तीनों पुत्र साक्षात् उन्हीं के प्रतिरूप थे। इनके परिवार पर अंग्रेजों का कहर टूटता ही रहता था। श्री अजीत सिंह स्वतन्त्रता के युद्ध को आगे बढ़ाने के लिए विदेश चले गए। वहाँ (ब्राजील) से वे सन् 1947 ई. में ही लौट सके, परन्तु स्वतन्त्रता की पहली ही प्रात: (15 अगस्त 1947 ई) को 4 बजे उन्होंने देश के विभाजन से दु:खी होकर किसी योगी की भाँति स्वेच्छा से शरीर त्याग दिया। भगत सिंह के दूसरे चाचा सरदार स्वर्ण सिंह भी अंग्रेज सरकार के अन्यायों से मात्र 23 वर्ष की आयु में चल बसे। सरदार किशन सिंह जी का क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस व करतार सिंह सराभा से निरन्तर सम्पर्क रहता था। इन तीनों भाईयों ने सूफी अम्बा प्रसाद, लाला हरदयाल, महाशय घसीटा राम, केदार नाथ सहगल आदि क्रान्तिकारियों के साथ मिलकर भारतमाता सोसायटी की स्थापना की। इनके उग्र भाषणों व कार्यो के कारण अंग्रेजी सरकार ने तीनों भाईयों को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया।

- क्रमशः

ईश भजन

नमस्कार भगवान् तुम्हें भक्तों का बारम्बार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।
तुम कण-कण में लगे हुए हो तुझमें जगत् समाया है,
तिनका हो चाहे पर्वत हो सभी तुम्हारी माया हैं।
तुम दुनिया के हर प्राणी के जीवन के आधार हो,
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।
सबके सच्चे पिता तुम्हीं हो तुम्हीं जगत् की माता हो,
भाई, बन्धु, सखा, सहायक, रक्षक, पोषक दाता हो,
चींटी से लेकर हाथी तक सबके सृजनहार हो,
श्रद्धा रूपी भेंट हम, मंगलमय स्वीकार हो।
ऋषि, मुनि, योगीजन सारे तुम से ही वर पाते हैं,
क्या राजा क्या रंक तुम्हारे दर पर शीश झुकाते हैं।
परम कृपालु, परम दयालु, करूणा के भंडार हो,
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।
तूफानों से घिरे पथिक प्रभु तुम ही एक सहारा हो,
डगमग डगमग नैया डोले, तुम्हीं नाथ किनारा हो।
तुम खेवट हो इस नैया के और तुम ही पतवार हो,
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।
नमस्कार भगवान् तुम्हें भक्तों का बारंबार हो।
श्रद्धारूपी भेंट हमारी मंगलमय स्वीकार हो।।

- साभार वैदिक काव्यांजलि

वह महामानव कौन था जिसने भगत सिंह को शहीदे आजम भगत सिंह बना दिया

-गतांक से आगे

-कन्हैयालाल आर्य, ट्रस्ट उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

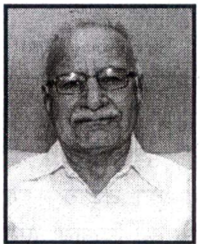

कन्हैया लाल आर्य

जीने पर भारी कदमों से धम-धम करते हुए एक सिख सज्जन अपने ग्रामीण वेश में ऊपर दफ्तर में आ गए। मैंने एक दफा नजर उठाकर उनकी तरफ देखा और लिखने में तन्मय रहा। सरदार जी के ऐसे अनेक संबंधी गांवों से आते-जाते रहते थे। इस सज्जन की दाढ़ी खूब प्रशस्त बर्फ की तरह श्वेत और चेहरा खूब तेजोमय गुलाबी रंग का था। मैंने उनकी और कोई ध्यान नहीं दिया। आगन्तुक भी मुझ से आदर की प्रतीक्षा न कर एक कुर्सी खींचकर चुपचाप दीवार के पास बैठ गए। मैं मालिक बना बैठा लिखता रहा और मेज के नीचे टीन की चीज पर जूते की ठोकरें भी जमाता रहा।''

अचानक वजनी गालियों से भरी एक करारी डाँट सुनकर आँख उठाकर देखा कि वयोवृद्ध भव्यमूर्ति की आँख लाल और चेहरा क्रोध से तमतमा उठा है और वे हाथ में थमी मोटी लाठी को फर्श पर ठोक रहे हैं।

गधा, उल्लू, नास्तिक, बदमाश, सिर तोड़ दूँगा।'' उनके हाथ में लाठी मेरे सर पर पड़ना ही चाहती थी। वृद्ध ने अपने आवेश को कठिनता से वश में कर मेज के नीचे संकेत करते हुए फटकारा-''उल्लू यही तेरी तमीज है।''

मेज के नीचे झाँक कर देखा तो अपने जूतों के बीच पाया एक आधा पड़ा हवनकुंड। सब कुछ समझ में आ गया। उपेक्षा के कारण पहचानने में भूल हुई थी। भगतसिंह से सुन रखा था कि दादा जी नित्य हवन करते हैं। जहाँ जाते हैं पोटली में हवनकुंड और हवन सामग्री साथ बाँध ले जाते हैं।

इस घटना से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है सरदार अर्जुनसिंह सिख धर्म के अनुयायी होते हुए भी आर्य समाज के प्रबल समर्थक थे।

सन् 1923 में भगत सिंह नेशनल कॉलेज लाहौर के विद्यार्थी बने थे। जन जागरण के लिए वे ड्रामा क्लब में भी भाग लेते थे। क्रांतिकारी अध्यापकों और साथियों से नाता जुड़ गया था। भारत को आजादी कैसे मिले, इस बारे में लम्बा चौड़ा अध्ययन और बहसें जारी थीं। घर में दादा श्री अर्जुन सिंह जी ने पोते (भगतसिंह) के विवाह की बात चलाई। उनके सामने अपना तर्क न चलते देख पिताजी के नाम यह पत्र लिखा और घर छोड़ दिया। पिताजी के नाम लिखा गया भगतसिंह का यह पत्र घर छोड़ने संबंधी उनके विचारों को सामने लाता है।

पूज्य पिता जी, नमस्ते

मेरी जिन्दगी मकसदे आला (उच्च उद्देश्य) यानि आजादी-ए-हिन्द के असूल (सिद्धान्त) के लिए वक्फ हो चुकी है। इसलिए मेरी जिन्दगी में आराम और दुनियाबी ख्वाहिशात (सांसारिक इच्छाएं) वायसे कोशिश (आकर्षक) नहीं है।

आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापू जी (दादा श्री अर्जुन सिंह जी) ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त ऐलान किया था कि मुझे खिदमते वतन (देश-सेवा) के लिए वक्फ (दान) कर दिया गया है। लिहाजा (अत:) मैं उस वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ। उम्मीद है मुझे माफ करेंगे।

आपका ताबेदार (सेवक)

भगत सिंह

यह उपर्युक्त पत्र दर्शाता है कि भगत सिंह के दादा श्री अर्जुन सिंह जी ने किस प्रकार अपनी संतानों में देश-प्रेम को कितना गहरे तक उतार दिया था।

सरदार अर्जुन जी के समय में आर्य समाज का जो रूप था, उसमें विद्रोह के तत्त्व अधिक थे। उस समय आर्य समाज का अर्थ था स्वदेशाभिमान सम्भवत: इसी कारणवश लाला लाजपत राय सूफी अम्बाप्रसाद और अर्जुनसिंह जी आदि सभी आर्य समाज से प्रभावित थे। अर्जुन सिंह सिक्ख से आर्य समाजी बने। इससे पता चलता है कि वे किस सीमा तक स्वतन्त्र चिन्तक थे। वे आर्य समाज के इतने भक्त बन गये कि जहां

जो अंग्रेजी सरकार न जब्त कर ली। लेकिन हथियार खरीदे गए। साथियों से किसी बात पर झगड़ा होने पर इन्हें धोखे से मारने की कोशिश की गई पर बच गए। मैनपुरी षड्यंत्र में इनका नाम आने की वजह से पूरे परिवार को शाहजहांपुर छोड़ना पड़ा।

राजकीय माफी की घोषणा के बाद फिर शाहजहांपुर आए और फिर से क्रांतिकारी जीवन जीने लग गए। उन्होंने अबकी बार एक बृहत संगठन 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसियसन' का निर्माण किया। संगठन के क्रांतिकारी आंदोलन को गति देने के लिए धन संग्रह हेतु रेलवे डकैती की योजना बनाई, और काकौरी रेलवे डकैती को सफलतापूर्वक अंजाम दे दिया गया। किन्तु आस्तीन में सांप छुपा हुआ था। ऐसा गहरा मुंह मारा कि चारों खाने चित्त कर दिया। इस पर उन्होंने लिखा है-

जिन्हें हम हार समझते थे गला अपना सजाने को,
वही अब नाग बन बैठे, हमें काट खाने को।
खैर गिरफ्तारियाँ हुई, मुकदमा चला।

मुकदमे में उन्होंने एक ठाकुर साहब को गवाही के लिए पत्र लिखा। उन्होंने पुलिस के दबाव में ये लिखकर दे दिया कि हम बिस्मिल को जानते तक नहीं। ये वही ठाकुर साहब थे जिनकी जमानत बिस्मिल ने घर वालों के लाख मना करने पर भी करवाई थी जब उन्हें कोई जमानती नहीं मिल रहा था।

हिंदू-मुस्लिम झगड़ों में जिनके घरों की रक्षा की, उन्होंने उनके खिलाफ झूठी गवाहियां दी। भरोसेमंद मित्र भी गवाही से मुकर गए। लेकिन उन्हें अशफाक उल्ला खाँ जैसा एक सच्चा क्रांतिकारी साथी मिला जो उनके साथ ही फांसी के फंदे पर झूलकर शहीद हो गया। जो बिस्मिल का दायां हाथ कहलाया। 19 दिसम्बर 1930 को वन्देमातरम् और भारत माता की जय कहते हुए फांसी के तख्ते के निकट गए। चलते समय कह रहे थे।

''मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकि मैं न रहूं न मेरी, आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,
तेरी ही जिक्र या तेरी ही जूस्तजू रहे।

ऐसे थे इस भारत माता की गोद में और आर्यसमाज की छत्रछाया में पले बढ़े अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकरं अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

रामप्रसाद बिस्मिल क्रान्तिकारी

- डॉ. सतीश कुमार इंजीनियर

11 जून 1897 को शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश में एक महान क्रांतिकारी का जन्म हुआ था। वे महानक्रांतिकारी थे- पं. रामप्रसाद बिस्मिल। उनका जीवन आज के युवा साथियों के लिए प्रेरणा स्रोत है। हमें आजादी के लिए शहीद हुए वीरों की जीवनियां पढ़नी चाहिए। आजादी के लिए शहीद होने वाले वीरों को जो व्यक्ति कृतज्ञतापूर्ण स्मरण नहीं करता है वह कृतघ्न है। जो देश अपने देशभक्त बलिदानी वीरों को भुला देता है वह फिर से गुलाम हो जाता है। देशभक्त क्रांतिकारी वीर लक्ष्य को पाने के लिए भूखों मरते थे, तन पर वस्त्र नहीं होते थे, हाथ में पैसा नहीं होता था, रोगग्रस्त होने पर न दवा का प्रबंध होता था, न अस्पताल का। उनके परिवार भी इसी दशा में रहते थे। कोई पड़ोसी या ग्रामवासी उन्हें पूछता तक नहीं था, सहायता करने की बात तो दूर की है। जेलों में जाने पर मुकदमा लड़ने के लिए न पैसे का प्रबंध हो पाता था, न वकील का। अर्थाभाव में रोगग्रस्त होकर परिवार के सदस्य मौत के मुंह में चले जाते थे। फिर भी उन युवकों में देशभक्ति की भावना कम नहीं होती थी, उत्साह और उमंग से भरपूर रहते थे और अंग्रेजी साम्राज्यवाद को चैन की नींद नहीं सोने देते थे। पं. रामप्रसाद बिस्मिल ने भी अपने जीवन में तमाम मुश्किलों का सामना किया। फिर भी उनके उत्साह में कमी नहीं आई।

कहते हैं ना माता निर्माता भवति। पं. रामप्रसाद बिस्मिल का निर्माण भी उनकी माता ने किया था। उनकी माता भी क्रांतिकारी विचारों वाली थी। पंडित जी के परिवार में एक प्रथा थी जिसके अनुसार कन्या को जन्म होते ही मार दिया जाता था। परन्तु पंडित जी की माता जी ने इस प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई और पंडित जी की सभी बहनों को पाला-पोषा और अच्छी शिक्षा देकर धूमधाम से शादी की। उन्होंने अपनी आत्मकथा में कहा है कि मुझमें जो कुछ जीवन तथा साहस आया वह मेरी माता जी और गुरु सोमदेव जी की कृपाओं का ही परिणाम है। यदि मुझे ऐसी माता ना मिलती तो मैं अति साधारण मनुष्यों की भांति संसार चक्र में फंसकर जीवन निर्वाह करता। शिक्षादि के अतिरिक्त क्रांतिकारी जीवन में भी उन्होंने मेरी वैसी ही सहायता की जैसी मैजिनी की उनकी माता ने की थी।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन में एक समय ऐसा था कि वे बुरी तरह कुटेवों में फंस गए थे। वे 14 वर्ष के थे तो उन्हें पिताजी की संदूक से पैसे चुराने की आदत पड़ गई थी। कुमारावस्था में स्वतन्त्रतापूर्वक पैसा हाथ आ जाने से कुरीतियों ने उन्हें घेर लिया। एक दिन में 50-60 सिगरेट पीने लगे थे। परमात्मा की कृपा से चोरी पकड़ी गई और उर्दू मिडिल कक्षा में दूसरी बार फेल हुए तो पड़ोस के मन्दिर में पुजारी के पास जाने लगे। वे बड़े सच्चरित्र व्यक्ति थे। पुजारी जी के उपदेशों का उन पर उत्तम प्रभाव पड़ा। धीरे-धीरे व्यायाम भी करने लगे और सब कुटेव छूट गई। पर सिगरेट नहीं छूटी। बाद में वह भी अंग्रेजी विद्यालय के एक साथी सुशीलचन्द्र सेन की कृपा से छूट गई। ये होता है सत्संग का प्रभाव। इसीलिए हम कहते हैं कि अपने बच्चों, साथियों को वैदिक सत्संग में लाया करो। आर्यसमाज के वैदिक सत्संग में जो कोई भी आता है या सुनता है, उसको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल की प्रवृति अब ईश्वर स्तुति प्रार्थना की हो चुकी थी तो महाशय मुंशी इन्द्रजीत ने उनकी यह प्रवृति देख आर्यसमाज संबंध ी उपदेश दिया। इसके बाद उन्होंने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा और फिर तो उनका जीवन ही बदल गया।

19 वर्ष की आयु में बिस्मिल जी शाहजहांपुर सेवा समिति से जुड़कर क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे। इसके बाद उन्हें हथियारों की जरूरत पड़ी तो उनके लिए धन संग्रह हेतु ''अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली' नामक पुस्तक छपवाई।

आर्य समाज संस्थापक

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलो!

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलो!

आश्रम संस्थापक

पूज्य आत्मस्वामी जी महाराज

51 कुण्डों मे यज्ञ पूर्णाहुति

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ हरियाणा का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

शुक्रवार, 1 सितम्बर से सोमवार 2 अक्टूबर 2017 तक

सानिध्य पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी मुख्य अधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

योगनिर्देशक एवं यज्ञब्रह्मा:-

- आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी चितेश्वरानन्द जी सरस्वती योग-यज्ञ विशेषज्ञ की अध्यक्षता में योग साधना एंव चतुर्वेद ब्रह्मपारायण बृहद्यज्ञ 1 सितम्ब शुकवार से आरम्भ होने पर 2 अक्टूबर सोमवार 51 कुण्डों में यज्ञपूर्णाहुति यजमान बनने के लिए आप शीघ्र सम्पर्क करें ।
- इस शुभावसर पर आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहने की दीक्षा, गृहस्थआश्रम त्याग वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा और सन्यास आश्रम की दीक्षा लेने वाले इच्छुक बन्धु सम्पर्क करें। अत्यन्त प्रभावशाली दीक्षा समारोह का आयोजन विशाल स्तर पर किया जायेगा एवं विविध सम्मेलनों का आयोजन प्रभावशाली हो
- भव्य स्मारिका का प्रकाशन होना है। आप सभी से निवेदन है की स्मारिका में अपने लेख और अपनी फर्म के विज्ञापन प्रकाशनार्थ भेजकर स्मारिका की शोभ बढ़ाएं ।

आप सभी सह परिवार सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक :- सर्वट्रस्टी एवं सर्व सदस्यगण

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ (पंजीकृत) जि० झज्जर, हरियाणा, पिन - 124507

संपर्क सूत्र :- 9416054195, 9896578062

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

स्व. माता चमेली देवी आर्या न्यू मुल्तान नगर दिल्ली परिवार द्वारा 11000/-
श्रीमती छोटो देवी जी पत्नी स्व. वैद्य मुंशीराम जी सोनीपत 10000/-
श्री आनन्द कुमार जी गुप्ता शालीमार बाग, दिल्ली 10000/-
श्री पार्थ सुपुत्र श्री जैवेन्द्र जी दलाल, सैक्टर-6, बहा. 6000/-
श्रीमती वीरमती जी पत्नी स्व. प्रताप सिंह जी मलिक बहा. 5100/-
राहुल दहिया सुपौत्र डॉ. सुरजमल जी दहिया बहादुरगढ़ 5100/-
श्री सुशील जी चड्ढा टैगोर गार्डन, दिल्ली 5000/-
श्री ललित चौधरी विकासपुरी दिल्ली द्वारा संग्रह 2712/-
माता लक्ष्मी देवी कटारिया धर्मार्थ ट्रस्ट विकासकुंच विकासपुरी, दिल्ली 2500/-
श्री संजय जी बहादुरगढ़ झज्जर हरियाणा 2100/-
सब इंस्पैक्टर संदीप आर्य सु. श्री रणवीर सिंह दलाल,बहा. 2100/-
श्री सुरेन्द्र सिंह जी राठी सुपुत्र श्री राणा राठी बहादुरगढ़ 2100/-
श्रीमती आत्मशान्ता जी महावीर पार्क बहादुरगढ़ 2000/-
श्री सिद्धान्त सुपुत्र श्री राजवीर दलाल सैक्टर-6, बहा. 2000/-
श्रीमती कृष्णा आर्या गुड़गांव हरियाणा 1101/-
श्री दरबार सिंह जी गुलिया सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 1100/-
श्री राजेन्द्र सहरावत जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 1100/-
श्री शीलचन्द जी एकोरेट फैक्ट्री कसार बहादुरगढ़ 1100/-
श्री सुरेन्द्र जी सुपुत्र श्री वैद्य भीम सिंह जी आर्य सौलधा 1100/-
ग्राम नीलवाल दिल्ली द्वारा प्राप्त 1100/-
श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा जी कीर्ति नगर, नई दिल्ली 1100/-
श्री रामकुमार जी ओहल्याण सुपुत्र श्री ताले सांपला 1100/-
श्री ओमप्रकाश मलिक लक्ष्मी नगर दिल्ली 1100/-
मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र जी शर्मा नेहरू पार्क, बहा. 1000/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़ 1000/-
श्री प्रवीण जी गुलाटी सु. श्री राजेन्द्र गुलाटी पंजाबी बाग 1000/-
श्री पं. जयभगवान जी आर्य झज्जर हरियाणा 550/-
श्री राजकरन प्रधान आर्यसमाज बादली झज्जर 505/-
मां. हरिसिंह जी दहिया अध्यापक कॉलोनी, बहा. 501/-
श्री राधेश्याम जी आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 500/-
श्री प्रवीण जी महावीर पार्क, बहादुरगढ़ 500/-
श्री हंसराज जी ओहल्याण सु. श्री स्व. मांगेराम गढ़ीसांपला 500/-
कु. ऋचा आर्या सुपुत्री श्री सुदामा शास्त्री जी फतेहाबाद 500/-
डॉ. अशोक जी नागपाल झज्जर, हरियाणा 500/-
श्री अशोक छिकारा सैक्टर-6, बहादुरगढ़ 500/-
श्रीमती सरोज मल्होत्रा जी कीर्ति नगर, नई दिल्ली 500/-
श्री श्रेष्ठ कुमार आर्य सुपुत्र श्री संदीप आर्य बहादुरगढ़ 500/-
श्री जयप्रकाश जी घेवरा दिल्ली 500/-
श्री पदमचन्द जी आर्य गुड़गांव 500/-
मा. सुगचन्द आर्य मेवात 500/-
श्रीमती शान्ति देवी कालरा आर्य समाज त्रिनगर दिल्ली 500/-
श्री नरेन्द्र कालरा जी आर्य समाज त्रिनगर दिल्ली 500/-
श्रीमती अनिता देवी जहांगीरपुर गांव झज्जर 500/-
डॉ. हरिओम् शर्मा ब्रह्मशक्ति संजिवनी अस्पताल बहा. 500/-

विशिष्ट भोजन

श्रीमती अंगुरी देवी जी धर्मपत्नी श्री रणवीर सिंह जी छिल्लर नेहरू पार्क बहादुरगढ़ 1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री अशोक कुमार जी सुपुत्र श्री श्रीभगवान् जी दयानन्द नगर बहादुरगढ़ 1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री राजेश जी रिहानी बहादुरगढ़ 1 समय का विशिष्ट भोजन
श्रीमती वीरमती मलिक मॉडल टाऊन बहादुरगढ़ 1 समय का विशिष्ट भोजन

विविध वस्तुएं

फरिश्ता सॉप एण्ड चरखा कैमिकल फैक्टरी 2 पेटी साबुन, 200 रूपये
श्री जय कृष्ण जी द्वारका दिल्ली 50 किलो आटा, 500 रूपये
डॉ. दिव्या सिंह दयानन्द नगर, बहादुरगढ़ 7 छाते
श्री शुक्ला जी नैनपाल मन्दिर टीकरी कंला दि. 2 टीन सरसो तेल
श्री आशीष जी परनाला बहादुरगढ़ 1 टीन रिफाइन्ड, 12 किलो चीनी 40 किलो आटा
श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली 1 टीन तेल
पुरी ऑयल मील बहादुरगढ़ 1 टीन रिफाइन्ड तेल

अन्न के लिए प्राप्त

श्रीमती विमला देवी जी नजफगढ़ दिल्ली 5100/-
श्री दलबीर सिंह जी नजफगढ़ दिल्ली 2100/-
श्री हरप्रसाद जी यादव झुलझुली दिल्ली 2100/-
श्री अशोक कुमार जी नजफगढ़ दिल्ली 2100/-

गौशाला

श्रीमती मोनिका देवी जी दहिया श्री राज सिंह दहिया बराही रोड, बहादुरगढ़ 5 बोरी खल
श्री सत्यवीर जी फलसवाल भदानी झज्जर हरियाणा 500/-
श्री वर्धमान इण्डस्ट्रीज प्रा. लि. कम्पनी बहादुरगढ़ 20000/-
श्री होशियार सिंह जी आढ़ती तुड़ा मण्डी बहादुरगढ़ 1100/-
श्री लक्ष्मी जी राणा दयानन्द नगर बहादुरगढ़ 500/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 जुलाई 2017 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

जुलाई 2017

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

त्रिदिवसीय सरल आध्यात्मिक शिविर की झलकियां